तमसो मा ज्योतिर्गमय

शिक्षा सारथी

विद्यालय शिक्षा विभाग, हरियाणा की मासिक पत्रिका

वर्ष- 11, अंक - 8, जुलाई 2023 , मूल्य-15 रु

schooleducationharyana.gov.in | shikshasaarthi@gmail.com

'राष्ट्रीय सेवा योजना' नव-युग का संदेश है
जगे गाँव, नगर जगे हैं, जागा सारा देश है

हम बढ़े तो सब बढ़ेंगे

'राष्ट्रीय सेवा योजना' लक्ष्य गीत

उठें समाज के लिए उठें-उठें
जगें स्वराष्ट्र के लिए जगें-जगें
स्वयं सजें वसुन्धरा सँवार दें- 2

हम उठे उठेगा जग हमारे संग साथियो
हम बढ़े तो सब बढ़ेंगे अपने आप साथियो
जमीं पे आसमाँ को उतार दें- 2
स्वयं सजें वसुन्धरा सँवार दें- 2

उदासियों को दूर कर खुशी को बाँटते चलें
गाँव और शहर की दूरियों को पाटते चलें
ज्ञान को प्रचार दें, प्रसार दें
स्वयं सजें वसुन्धरा सँवार दें- 2

समर्थ बाल वृद्ध और नारियाँ रहें सदा
हरे-भरे वनों की शाल ओढती रहे धरा
तरक्कियों की एक नई कतार दें- 2
स्वयं सजें वसुन्धरा सँवार दें- 2

ये जाति धर्म बोलियाँ बनें न शूल राह की
बढ़ाएँ बेल प्रेम की, अखंडता की चाह की
भावना से ये चमन निखार दें
सद्भावना से ये चमन निखार दें- 2
स्वयं सजें वसुन्धरा सँवार दें- 2

उठें समाज के लिए उठें-उठें
जगें स्वराष्ट्र के लिए जगें-जगें
स्वयं सजें वसुन्धरा सँवार दें- 2

शिक्षा सारथी

जुलाई 2023

प्रधान संरक्षक
मनोहर लाल
मुख्यमंत्री, हरियाणा

संरक्षक
कँवर पाल
स्कूल शिक्षामंत्री, हरियाणा

मुख्य संपादक
राजेश खुल्लर
अतिरिक्त मुख्य सचिव,
विद्यालय शिक्षा विभाग, हरियाणा

संपादकीय परामर्श मंडल
डॉ. अंशज सिंह
निदेशक,
माध्यमिक शिक्षा, हरियाणा
एवं
राज्य परियोजना निदेशक,
हरियाणा विद्यालय शिक्षा परियोजना परिषद

अशोक कुमार गर्ग
निदेशक,
मौलिक शिक्षा, हरियाणा

सतपाल शर्मा
अतिरिक्त निदेशक (प्रशासन)
माध्यमिक शिक्षा, हरियाणा

संपादक
डॉ. देवियानी सिंह

उप-संपादक
डॉ. प्रदीप राठौर

डिजाइन एवं प्रिंटिंग
हरियाणा संवाद सोसायटी

मूल्य: 15 रुपये, **वार्षिक:** 150 रुपये

Published & Printed by Sunita Devi on behalf of President, Shiksha Lok Society-cum-Director General Secondary Education, Haryana. Published from office of Director General Secondary Education, Haryana, Plot No. 1-B, Shiksha Sadan, Sector - 5, Panchkula.

Printed by M/ s. J.K. Offset Graphic Pvt. Ltd. at its printing press B-278, Okhla, Industrial Area, Phase -I,
New Delhi-110020

Editor: Dr. Deviyani Singh.

"अपनी बड़ाई रण में जाते वक्त नहीं, रण से आते वक्त करें।"

- राष्ट्रीय एकता शिविरों का सफलतापूर्वक आयोजन कर हरियाणा ने रचा इतिहास 5
- एनएसएस शिविर कर रहे हैं सर्वांगीण विकास 10
- ज़िम्मेदार नागरिक तैयार करती है 'राष्ट्रीय सेवा योजना' 14
- कक्षा-शिक्षण को कैसे बनाएँ रोचक व प्रभावशाली 18
- प्राथमिक स्तर पर बच्चों को मौखिक कहानी सुनाना 20
- लोकनृत्य में खूब रंग जमाते हैं स्पेशल टीचर कुलदीप कुमार शर्मा 21
- समावेशी शिक्षण अभियान में एजुकेशनल पॉडकास्ट की उपयोगिता 22
- निरंतर उत्कृष्टता की ओर अग्रसर है डाइट हुसैनपुर 24
- खेल-खेल में विज्ञान 28
- Let's come together to prevent drug abuse 32
- Beat Plastic Pollution 34
- Greed leads to Self Destruction 36
- All About Dipstick Studies 37
- The Gift of Love 39
- Basic Rights of Women in India 40
- SATSQ 44
- Career guidance for 12th-grade students 46
- Ode to Sun Worshippers 47
- Amazing Facts 48
- General Knowledge 49

पत्रिका में प्रकाशित लेखों में लेखकों की निजी राय हो सकती है। यह आवश्यक नहीं कि विभाग उनसे सहमत हो।

श्रम के प्रति गरिमा का भाव जगाती एनएसएस

भारत सरकार द्वारा राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी के जन्म-शताब्दी वर्ष 1969 में राष्ट्रीय सेवा योजना (एनएसएस) इस आशय के साथ प्रारंभ की गई थी कि विद्यार्थियों में सामाजिक दायित्व, स्वप्रेरित अनुशासन के साथ श्रम के प्रति सम्मान की भावना उत्पन्न हो। विद्यार्थी अवकाश के समय का सदुपयोग करके समाज-सेवा के विविध कार्यों में रुचि लें तथा शिक्षा के साथ-साथ सामाजिक जिम्मेदारियों का भी अहसास रखें।

एनएसएस का आदर्श वाक्य है- नॉट मी बट यू। एनएसएस बैज में कोणार्क पहिया 8 पहरों वाले दिन के 24 घंटों का संकेत देता है। यह राष्ट्र की सेवा के लिए तैयार होने की याद दिलाता है। बैज में लाल रंग एनएसएस स्वयं सेवकों द्वारा प्रदर्शित ऊर्जा और भावना को दर्शाता है। नीला रंग उस ब्रह्मांड को दर्शाता है, जिसमें एनएसएस एक छोटा सा हिस्सा है, जो मानव जाति के कल्याण के लिए अपना योगदान देने के लिए तैयार है।

हरियाणा प्रदेश में यह कार्यक्रम सुभीते से चल रहा है। प्रदेश के राजकीय विद्यालयों में एनएसएस की 681 व निजी विद्यालयों में 188 इकाइयाँ चल रही हैं। प्रदेश में कुल 869 इकाइयों में 86,900 युवा जुड़े हुए हैं। राजकीय विद्यालयों में चल रही इकाइयाँ केंद्र सरकार द्वारा वित्त पोषित हैं, जिसके अन्तर्गत हर इकाई को नियमित गतिविधियों के लिए 40,000 रुपये व विशेष शिविरों के आयोजन के लिए 35,000 रुपये की वार्षिक राशि प्रदान की जाती है।

हरियाणा प्रदेश में जून के महीने को यदि एनएसएस शिविरों का महीना कहें तो अतिशयोक्ति न होगी, क्योंकि इस मास में एनएसएस के जिला स्तरीय, राज्य स्तरीय, राष्ट्रीय एकता शिविर व एडवेंचर शिविर आयोजित हुए जिनमें हरियाणा के कक्षा ग्यारहवीं व बारहवीं में शिक्षा ग्रहण करने वाले हजारों छात्रों ने विभिन्न स्तरों के शिविरों में सक्रिय भागीदारी करके अपने व्यक्तित्व को सँवारने व समाज से जुड़ने का प्रयास किया। हरियाणा के नौ जिलों में जिला स्तरीय शिविर आयोजित हुए, वहीं तीन राज्य स्तरीय शिविर और पहली बार आयोजित दो राष्ट्रीय एकता शिविर तथा दो एडवेंचर शिविरों का भी आयोजन हुआ। इन सभी में हरियाणा के हजारों छात्रों ने सक्रिय भागीदारी कर संस्कार, संपर्क, सहयोग, सेवा व समर्पण की भावना से साक्षात्कार किया।

'शिक्षासारथी' का प्रस्तुत अंक एनएसएस योजना व इसके अन्तर्गत चलाई जा रही गतिविधियों पर केंद्रित है। सदा की भाँति आपके विचारों, सुझावों व प्रतिक्रियाओं की प्रतीक्षा रहेगी।

- संपादक

राष्ट्रीय एकता शिविरों का सफलतापूर्वक आयोजन कर हरियाणा ने रचा इतिहास

स्कूली विद्यार्थियों के लिए देश में पहली बार आयोजित हुए राष्ट्रीय एकता शिविर, हरियाणा ने की मेज़बानी, सात राज्यों के चार सौ स्वयंसेवकों ने की शिरकत

सुनील कुमार

भारतवर्ष अनेक धर्मों, भाषाओं, जातियों, प्रजातियों, सम्प्रदायों, संस्कृतियों, विचारों और मान्यताओं की भूमि होने के पश्चात् भी अखंड है। इतनी सारी विविधताओं में भी एकता का भाव प्रकट होना भारतवर्ष की पहचान रही है। भारत की एकता का यह भाव प्राचीन काल से ही प्रसिद्ध है और ऐसा नहीं है कि इस भाव को तोड़ने की कोशिश न की गई हो। इतिहास के अलग-अलग कालखंडों में विभिन्न विदेशी ताकतों ने इस एकता के भाव को खंडित करने के असंख्य कुत्सित प्रयास किये हैं, परन्तु उन्हें हमारी ताकत के सामने सदैव नतमस्तक होना पड़ा है। आज भी भारत वर्ष एक है तो इस का मूल कारण राष्ट्र का युवा-वर्ग है जो विविधता में एकता को अपना मूलमन्त्र मानता है तथा इसी मूलमंत्र को अपनी आत्मा में सँजो कर रखता है। युवा वर्ग में राष्ट्रीय एकता का यह बीज रूपी मूलमंत्र विद्यार्थी जीवन में ही बो दिया जाता है जो आगे चलकर राष्ट्रीय सेवा योजना जैसे संगठन से जुड़कर अंकुरित, पल्लवित और पोषित हो उठता है। राष्ट्रीय सेवा योजना राष्ट्र की युवाशक्ति के व्यक्तित्व विकास हेतु युवा एवं खेल मंत्रालय भारत-सरकार द्वारा संचालित एक राष्ट्रीय कार्यक्रम है जो विद्यार्थियों में राष्ट्रीय एकता के भाव को पैदा करने के लिए समय-समय पर राष्ट्रीय एकता शिविरों का आयोजन करता रहता है। इसी तरह के आयोजन जून महीने में कुरुक्षेत्र और कैथल जिले में आयोजित किये गये।

गीता जन्मस्थली कुरुक्षेत्र और कपिस्थली कैथल में दिनांक 14 जुलाई से 20 जुलाई तक सात दिवसीय राष्ट्रीय एकता शिविरों का आयोजन किया गया। यह विद्यालय शिक्षा विभाग के लिए ही नहीं, अपितु पूरे हरियाणा प्रदेश के लिए गर्व और सौभाग्य का विषय है कि देश में पहली बार विद्यालय स्तर के स्वयंसेवकों के लिए इस तरह के शिविरों का आयोजन करके हरियाणा प्रदेश ने अपना नाम स्वर्णिम अक्षरों में अंकित करवाया। महाविद्यालय और विश्वविद्यालय स्तर पर तो राष्ट्रीय एकता शिविर समय-समय पर आयोजित होते आ रहे हैं, लेकिन राष्ट्रीय सेवा योजना के 54 वर्षों के इतिहास में यह पहला अवसर है, जिसका सूत्रपात हरियाणा से किया गया।

इन राष्ट्रीय शिविरों में मेज़बान राज्य हरियाणा समेत देश के सात राज्यों ने भाग लिया, जिनमें हिमाचल प्रदेश, पंजाब, राजस्थान, छत्तीसगढ़, महाराष्ट्र, कर्नाटक, तेलंगाना तथा तीन केंद्र शासित प्रदेश- जम्मू-कश्मीर, चंडीगढ़ तथा दिल्ली शामिल हुए। हरियाणा राज्य से पंचकूला, अम्बाला, यमुनानगर, कुरुक्षेत्र, कैथल, पानीपत, सोनीपत, रोहतक, फरीदाबाद, महेंद्रगढ़,

पलवल, नूँह, भिवानी, चरखी-दादरी, हिसार, जींद, फतेहाबाद तथा सिरसा जिलों की एनएसएस विद्यालय इकाइयों ने इसमें प्रतिभागिता की। दोनों राष्ट्रीय एकता शिविरों में कुल 402 स्वयंसेवक तथा 40 कार्यक्रम अधिकारी सम्मिलित हुए।

राष्ट्रीय एकता शिविर की गतिविधियाँ-

राष्ट्रीय सेवा योजना के एकता शिविरों का उद्देश्य स्वयंसेवकों का सर्वांगीण विकास करते हुए भविष्य में उन्हें राष्ट्र के प्रति बेहतर नागरिक के रूप में तैयार करना होता है ताकि वे समुदाय में रहकर अपने कर्तव्यों का सही ढंग से निर्वहन कर सकें। उपर्युक्त बिंदु को ध्यान में रखकर ही कुरुक्षेत्र और कैथल के राष्ट्रीय एकता शिविरों की सात दिवसीय गतिविधि योजना तैयार की गई थी। प्रातःकालीन सत्र में स्वयंसेवकों को भारतीय सनातन संस्कृति की प्राचीनतम विधा जो विश्व के लिए भारतीय संस्कृति का अमूल्य उपहार भी है, योग एवं ध्यान से परिचय करवाकर अभ्यास करवाया जाता था। इस कार्य के लिए भारतीय योग संस्थान के कुशल योग प्रशिक्षकों की सेवाएँ ली गईं। जून महीने की 21 तारीख को अंतरराष्ट्रीय योग दिवस मनाया जाता है। इस महीने में तो सारा विश्व ही योगमय हो जाता है। स्वयंसेवकों को तनाव मुक्त रखने एवं उनके मस्तिष्क को एकाग्र करने के लिए ध्यान, प्राणायाम, आसन आदि अनेक अभ्यास प्रतिदिन इस सत्र में करवाए जाते थे। शिविर का दूसरा सत्र महत्त्वपूर्ण एवं संवेदनशील विषयों के लिए आरक्षित था, जिसमें वक्तव्यों एवं भाषणों के लिए विषय-विशेषज्ञों को आमंत्रित किया जाता था। इस सत्र का मुख्य उद्देश्य स्वयंसेवकों को महत्त्वपूर्ण सामाजिक विषयों के प्रति जानकारी प्रदान करना होता था ताकि वे समुदाय के बीच इस बारे व्यापक प्रचार-प्रसार करके उन्हें जागरूक

कर सकें। उपर्युक्त विषयों में शिक्षा, साक्षरता, स्वास्थ्य, परिवार कल्याण और पोषण, स्वच्छता, पर्यावरण संरक्षण, सामाजिक सेवा कार्यक्रम, महिलाओं की स्थिति में सुधार, उत्पादन उन्मुख कार्यक्रम, आपदा राहत तथा पुनर्वास संबंधी कार्यक्रम, सामाजिक बुराइयों के खिलाफ अभियान, डिजिटल भारत, कौशल भारत, योग इत्यादि जैसे प्रमुख कार्यक्रमों के बारे में जागरूकता पैदा करना आदि शामिल है। इस सत्र के सम्बोधन हेतु वक्ताओं के रूप में अनेक प्रसिद्ध शिक्षाविद, गणमान्य अधिकारी एवं विशेष रूप से राष्ट्रीय सेवा योजना मुख्यालय, नई दिल्ली के युवा कार्यक्रम अधिकारी श्री देशराज ने शिविर में पहुँचकर शिविर की शोभा में चार चाँद लगाने का कार्य किया।

शिविर के स्वयंसेवक एक-दूसरे की संस्कृतियों को बेहतर ढंग से समझ सकें, इसके लिए प्रतिदिन दोपहर के भोजन के पश्चात् सांस्कृतिक गतिविधियों का आयोजन किया जाता था। सांस्कृतिक गतिविधियों में लोकगायन, लोकसंगीत, लोकनृत्य, लघुनाटिका, भाषण, कविता, प्रश्नोत्तरी, नारा लेखन एवं पेंटिंग प्रतियोगिता आदि विधाओं को सम्मिलित किया गया था। स्वयंसेवकों ने इन प्रतियोगिताओं के माध्यम से अपने-अपने राज्यों की शानदार प्रस्तुतियाँ पेश करके एक तरह से लघु भारत की झाँकी को मंच पर उतारने का कार्य किया। साहित्यिक प्रतियोगिताओं में विभिन्न भाषाओं, राज्यों, संस्कृतियों आदि का भेद मिटाते हुए स्वयंसेवकों ने दल के रूप में अपनी प्रस्तुतियाँ दीं ताकि उनके मध्य एक-दूसरे के प्रति बेहतर समझ विकसित हो सके।

कुरुक्षेत्र भारतवर्ष में ही नहीं, अपितु विश्व में भी धर्मनगरी एवं पर्यटनस्थली के रूप में अपनी विशिष्ट पहचान रखता है। यहाँ गीता जन्मस्थली ज्योतिसर, श्रीकृष्ण संग्राहलय, पैनोरमा, कल्पना चावला तारामंडल, शेखचिल्ली का मकबरा, स्थानेश्वर महादेव मन्दिर, शक्ति पीठ भद्रकाली मन्दिर आदि ऐसे अनेक पर्यटन एवं तीर्थस्थल विद्यमान हैं जहाँ लोग आने के लिए तरसते रहते हैं। इन सभी स्थलों तथा विशेषकर हरियाणा राज्य की संस्कृति से परिचय करवाने के लिए स्वयंसेवकों को उपर्युक्त स्थलों का भ्रमण करवाया गया। इसके अतिरिक्त स्वयंसेवकों ने जब कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय में स्थित हरियाणा धरोहर संग्रहालय में उपलब्ध हरियाणा की संस्कृति को प्रदर्शित करती प्राचीन से प्राचीन वस्तुओं को तो देखा तो दूसरे राज्यों से आये स्वयंसेवक रोमांचित हो उठे और उन्होंने कहा कि हमारा हरियाणा में आना सार्थक हो गया।

संवाद...सम्बन्ध...सद्भावना...राष्ट्रीय एकता-

राष्ट्रीय एकता शिविर की थीम संवाद, सम्बन्ध सद्भावना और राष्ट्रीय एकता इन चार शब्दों पर आधारित थी। विभिन्न राज्यों से पहुँचे स्वयंसेवक एक-दूसरे को बेहतर ढंग से समझ सकें, जान सकें इसके लिए आपस में संवाद-प्रक्रिया का होना अति आवश्यक था। यह प्रक्रिया अच्छे से व्यवहार में लाई जाये इसके लिए उचित अवसरों को निर्मित करने के लिए विभिन्न भाषाओं और संस्कृतियों के मिले-जुले समूह बनाए गये ताकि समूह में रहते हुए स्वयंसेवक आपस में संवाद कर सकें। सात दिनों तक समूह में रहते हुए संवादों के माध्यम से उनके अंदर अच्छे सम्बन्ध विकसित हो गये। ये सम्बन्ध इन सात दिनों तक के ही मोहताज न हों, अपितु जीवन भर चलें। ऐसे संबंध विकसित हों जैसे परिवार के सदस्यों

बेहतरीन कार्य कर रही हैं एनएसएस इकाइयाँ

राष्ट्रीय सेवा योजना (एनएसएस) के स्वयंसेवकों ने समाज-सेवा के अनेक कार्यों को निःस्वार्थ भाव से पूर्ण किया है, जिसकी मैं प्रशंसा करता हूँ। जहाँ कोरोना काल के दौरान सम्पूर्ण देश की गति थम गई थी, वहीं एनएसएस स्वयंसेवकों ने अपने ध्येय वाक्य 'स्वयं से पहले आप' के अनुरूप आचरण करते हुए निःस्वार्थ भाव से जोखिमों का सामना करते हुए देशहित में जनकल्याणकारी कार्य, जैसे टीकाकरण, दवाइयों की आपूर्ति, खाद्य सामग्री की आपूर्ति, एम्बुलेंस सेवा इत्यादि कार्यों में विशेष योगदान दिया। रक्तदान, पर्यावरण सुरक्षा आदि क्षेत्रों में प्रदेश के एनएसएस स्वयंसेवकों ने सदैव महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

हरियाणा सरकार ने पूरे देश में पहली बार स्कूलों के एनएसएस स्वयंसेवकों के लिये दो राष्ट्रीय एकता शिविरों का आयोजन करके अन्य राज्यों के लिये अनुकरणीय उदाहरण प्रस्तुत किया है। गत माह स्कूल के एनएसएस स्वयंसेवकों के लिये दस दिवसीय साहसिक शिविरों का आयोजन किया गया जो निश्चित रूप से उनके सर्वांगीण विकास में सहायक बना है। सरकार ने स्कूलों के एनएसएस स्वयंसेवकों को महाविद्यालयों में दाखिला प्रक्रिया के दौरान पाँच अतिरिक्त अंक प्रदान कर प्रोत्साहित किया है।

सरकार द्वारा छात्रों के व्यक्तित्व विकास के लिये अधिकतम अवसर प्रदान करने के उद्देश्य से राज्य स्तरीय शिविर, जिला स्तरीय शिविरों का आयोजन करवाया जाता है, जिनके माध्यम से विद्यार्थियों में जीवन-मूल्यों का विकास होता है। प्रत्येक वर्ष उत्कृष्ट कार्य करने वाले कार्यक्रम अधिकारियों तथा स्वयंसेवकों को राज्य स्तरीय सेवा योजना पुरस्कार प्रदान कर उन्हें प्रोत्साहित किया जाता है।

कँवरपाल
स्कूल शिक्षा मंत्री, हरियाणा

या सम्बन्धियों के मध्य होते हैं। ऐसे प्रयास शिविर के दौरान किये गये। सम्बन्ध विकसित होने के बाद अगला चरण सद्भावना का था जिसमें एक-दूसरे के प्रति अच्छी भावनाएँ, सच्ची भावनाएँ, एक-दूसरे का ध्यान रखना आदि आता है। स्वाभाविक हैं अगर ये तीनों चरण संवाद, सम्बन्ध, सद्भावना अच्छे से व्यवहार में लाये जाएँ और सही ढंग से विकसित हो जाएँ तो राष्ट्रीय एकता का मार्ग आसानी से प्रशस्त हो जाता है। सम्पूर्ण शिविर की दैनिक गतिविधियाँ उपर्युक्त चार चरणों को ध्यान में रखकर ही आयोजित की गई थीं।

राष्ट्रीय एकता शिविर का महत्त्व-

भारत वर्ष एक अद्भुत, अनुपम और अनूठा राष्ट्र है, जिसका निर्माण विविध भाषा, बोली, धर्म, संस्कृति, प्रजाति, अहिंसा और न्याय के सिद्धांतों पर आधारित, स्वाधीनता संग्राम, सांस्कृतिक विकास की समृद्ध विरासत, सर्वधर्म समभाव तथा वसुधैव कुटुम्बकम् जैसे आदर्श एवं शाश्वत वाक्यों द्वारा एकता के सूत्र में बाँधकर हुआ है। इसी गौरवमयी साझे इतिहास के बीच आपसी समझ की भावना ने विविधता में विशेष एकता को सम्भव बनाया है जोकि राष्ट्रवाद के लौ के रूप में हमारे सामने आती है। राष्ट्रवाद की इसी भाव को और अधिक विकसित करने हेतु ही खेल एवं युवा मामले मंत्रालय भारत-सरकार राष्ट्रीय सेवा योजना के ध्वज तले राष्ट्रीय एकता शिविरों का आयोजन करता है। इन शिविरों के माध्यम से ही ऐसे वातावरण का निर्माण किया जाता या फिर स्वयंसेवकों को ऐसे अनुभव प्रदान किये जाते हैं जिसमें वे विविधता में एकता के सूत्र को समझ सकें। कुरुक्षेत्र और कैथल में आयोजित किये गये राष्ट्रीय एकता शिविरों में आठ राज्यों, तीन केंद्र-शासित प्रदेशों तथा हरियाणा के अठारह जिलों की एनएसएस इकाइयों ने भाग लेकर विभिन्न भाषाओं, बोलियों, संस्कृतियों, विचारों, मान्यताओं, आस्थाओं, रीति-रिवाजों, व्यंजनों, वेशभूषा आदि की अद्भुत झाकियाँ प्रस्तुत कीं। स्वयंसेवकों ने अपनी-अपनी संस्कृतियों को लोकगायन, लोकसंगीत, लोकनृत्य, जिसमें जम्मू-कश्मीर का राउफ नृत्य, राजस्थान का गणगौर एवं झुलनलीला, छत्तीसगढ़ का गौर मारिया, महाराष्ट्र का तमाशा एवं लावणी, तेलंगाना का पेरिली शिव तांडव, हिमाचल का डांगी, पंजाब का भांगड़ा, गुजरात का डांडिया एवं गरबा, कर्नाटक का यक्षगान और हरियाणा के झूमर और धमाल नृत्य शामिल रहे, के माध्यम से प्रस्तुत किया । राष्ट्रीय एकता के भाव को व्यंजनों के माध्यम से भी समझा और अनुभव किया गया, जब हर रोज राज्य विशेष के पकवानों को शिविर में परोसा जाता था। हरियाणा जिसके लिए यह उक्ति प्रसिद्ध है- देसाँ म्ह देस हरियाणा, जित दूध दही का खाणा, ने मोटे अनाज से बने व्यंजन, दूध, दही चूरमा, गुजरात ने ढोकला, राजस्थान ने दाल-बाटी-चूरमा, तेलंगाना ने साम्भर वड़ा आदि से अपनी खान-पान की संस्कृति को प्रस्तुत किया। इसके अतिरिक्त स्वयंसेवकों ने पोशाकों और परिधानों के माध्यम से भी अपने-अपने राज्यों की संस्कृति को शिविर में प्रस्तुत किया । विभिन्न भाषाओं और बोलियों के माध्यम से शिविर की सुन्दरता में उस समय और भी चार चाँद लग जाते थे जब एक राज्य के स्वयंसेवक दूसरे राज्य की टूटी-फूटी बोली या भाषा में संवाद करते सुने जाते थे। इन सात दिनों में इतनी सारी विविधताएँ होने के बावजूद भी जिस तरह से सभी स्वयंसेवकों के अंदर परिवार और अपनेपन का जो भाव था, वह कहीं न कहीं **एक भारत श्रेष्ठ भारत** को प्रदर्शित कर रहा था।

हरियाणा प्रदेश ने राष्ट्रीय एकता शिविरों का सफलता

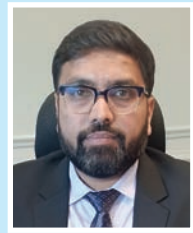

सामुदायिक सेवा के माध्यम से व्यक्तित्व-विकास

राष्ट्रीय सेवा योजना युवाओं के व्यक्तित्व विकास हेतु चलाया जाने वाला एक प्रमुख कार्यक्रम है। हरियाणा के विद्यालयों में इसकी 869 इकाइयाँ सफलता से चल रही हैं और 86,900 युवाओं की एक बड़ी संख्या समाज-सेवा के इस कार्यक्रम के साथ जुड़ी हुई है। इसके माध्यम से विद्यार्थी समाज के साथ मिलकर जन-कल्याण के कार्य करते हैं। साक्षरता, पर्यावरण सुरक्षा, स्वास्थ्य एवं स्वच्छता, प्राकृतिक आपदा के समय पीड़ित लोगों की सहायता आदि अनेक कार्यों में एनएसएस स्वयंसेवक अपनी महत्वपूर्ण भूमिका अदा करते हैं। विभिन्न मुद्दों पर रैलियों का आयोजन करके समाज को फैली कुरीतियों व अन्य समस्याओं के प्रति जागरूक रहने का संदेश देते हैं। समाज-सेवा में रत रहने से उनके मन में समाज के प्रति जिम्मेदारी का अहसास तो पैदा होता ही है, साथ ही उनमें अनेक प्रकार के जीवन-मूल्यों का विकास भी होता है। इससे उनका अपना व्यक्तित्व निखरता है और वे देश के संवदेनशील व जिम्मेदार नागरिक बनते हैं। वास्तव में इस योजना का मुख्य उद्देश्य युवाओं को सामुदायिक सेवा के माध्यम से व्यक्तित्व को विकसित करने के लिए अनुभव प्रदान करना है।

-डॉ. अंशज सिंह
निदेशक माध्यमिक शिक्षा
एवं राज्य परियोजना निदेशक, हरियाणा

पूर्वक आयोजन करके समस्त भारत के राज्यों के लिए जो आदर्श प्रस्तुत किया है वो कई मायनों में प्रशंसनीय तो है ही, साथ ही दूसरे राज्यों के लिए अनुकरणीय भी है। विद्यालय के 10+2 के स्वयंसेवकों के लिए ये शिविर देश में पहली बार आयोजित किये गये थे, जिनकी मेजबानी हरियाणा को मिली थी। हरियाणा राज्य इन शिविरों का आयोजन किस तरह करेगा, किस तरह की गतिविधियाँ आयोजित की जायेंगी आदि कई प्रश्नों के उत्तर जानने और अवलोकन करन हेतु कई राज्यों ने अपने-अपने अध्ययन दल भी इन शिविरों में भेजे थे। इन अध्ययन दलों में से बहुत से राज्यों के दल तो इस आश्वासन के साथ विदा हुए हैं कि अगर भविष्य में उन्हें भी इस तरह का आयोजन करने का अवसर प्रदान किया जाता है तो वो भी हुबहू हरियाणा के मॉडल को अपने राज्य में क्रियान्वित करेंगे। विशेषकर अगर गुजरात राज्य की बात करें तो वे जुलाई महीने से ही अपने विश्वविद्यालयों, महाविद्यालयों और विद्यालयों में हरियाणा मॉडल को लागू करने जा रहे हैं। इन उपलब्धियों को देखते हुए अगर ये कहें कि हरियाणा के ये शिविर राष्ट्रीय एकता शिविरों के आयोजन में मील के पत्थर साबित हुए हैं, तो यह कहना गलत न होगा। उच्चतर शिक्षा विभाग हरियाणा तथा विशेष रूप से राज्य एनएसएस अधिकारी दिनेश कुमार इस कार्य के लिए बधाई के पात्र हैं जिनके भगीरथ प्रयासों के कारण यह अवसर हरियाणा को प्राप्त हुआ। इस शिविर के प्रतिभागियों से जब उनके शिविर के अनुभव के विषय में प्रस्तुत पंक्तियों के लेखक ने बात की, तो उनका उल्लास देखते ही बन रहा था। शिविर की व्यवस्था व खान-पान आदि से भी वे काफी संतुष्ट नज़र आ रहे थे। विदाई के समय का दृश्य काफी भावपूर्ण था, बहुत से नयन भीगे हुए थे। एक दूसरे के साथ खींची गई फोटो ही नहीं, मोबाइल नंबर भी लिये-दिये जा रहे थे। निश्चित तौर पर इस शिविर से प्राप्त अनुभव प्रतिभागियों की स्मृतियों में अवश्य ही लंबे समय तक बने रहेंगे।

- हिंदी प्राध्यापक
राजकीय मॉडल संस्कृति वरिष्ठ
माध्यमिक विद्यालय
इस्माईलाबाद, कुरुक्षेत्र, हरियाणा

एनएसएस शिविर कर रहे हैं सर्वांगीण विकास

इस सत्र में प्रदेश में दो राष्ट्र-स्तरीय, तीन राज्य स्तरीय व नौ जिला स्तरीय शिविरों का हुआ आयोजन

अशोक वशिष्ठ

ग्रीष्मावकाश में भ्रमण करना, कुछ नया सीखना, रुचिकर व साहसिक गतिविधियों में भागीदारी करना हर छात्र-छात्रा की चाहत होती है। अपने नाना-नानी या बुआ के घर जाकर कुछ दिन बिताने का अनुभव बच्चे पूरे वर्ष भर सुनाते रहते हैं। ग्रीष्म अवकाश को यादगार बनाने के लिए हर छात्र भरसक प्रयास करता है। व्यंजन बनाना, साइकिल चलाना, कंप्यूटर कोर्स, तैराकी, नृत्य या किसी खेल को सीखने के लिए ग्रीष्मावकाश बड़ा सही समय होता है। विभिन्न गतिविधियों के माध्यम से व्यक्तित्व विकास करने का सही समय भी ग्रीष्मावकाश है। शिक्षा विभाग हरियाणा के हज़ारों छात्रों को ऐसा ही अवसर प्राप्त हुआ राष्ट्रीय सेवा योजना के शिविरों में भागीदारी करने पर। जून के महीने को यदि एनएसएस शिविरों का महीना कहें तो गलत न होगा, क्योंकि इस मास में राष्ट्रीय सेवा योजना यानी एनएसएस के जिला स्तरीय, राज्य स्तरीय राष्ट्रीय एकता शिविर व एडवेंचर शिविर आयोजित हुए, जिनमें

हरियाणा के कक्षा ग्यारहवीं व बारहवीं में शिक्षा ग्रहण करने वाले हजारों छात्रों ने विभिन्न स्तरों के शिविरों में सक्रिय भागीदारी करके अपने व्यक्तित्व को सँवारने का प्रयास किया। हरियाणा के नौ जिलों में जिला स्तरीय शिविर आयोजित हुए, वहीं तीन राज्य स्तरीय शिविर और पहली बार आयोजित दो राष्ट्रीय एकता शिविर तथा दो एडवेंचर शिविरों का भी आयोजन हुआ। इन सभी में हरियाणा के हजारों छात्रों ने सक्रिय भागीदारी कर संस्कार, संपर्क,

सहयोग, सेवा व समर्पण की भावना को सीखा।

एनएसएस शिविर- घर से दूर एक बड़ा घर-

एनएसएस के सात दिवसीय विशेष शिविरों, चाहे वे किसी भी स्तर के हों, को संचालित करना आसान नहीं होता। शिविर में 200 स्वयंसेवक व कुछ कार्यक्रम अधिकारियों की भागीदारी होती है, जो मिलकर शिविर को संचालित करते हैं। सात दिनों के लिए शिविर संचालन हेतु विशेष समितियाँ, जैसे- पंजीकरण, स्वागत, भोजन निर्माण, खर्च प्रबंधन, निर्णायक मंडल, सामान आपूर्ति आदि बनाई जाती हैं, जिनमें स्वयंसेवक भी शामिल होते हैं। शिविर में स्वयंसेवकों को घर जैसा माहौल देने का पूरा प्रयास किया जाता है। प्रत्येक दिन की समय-सारणी बनाई जाती है, उसी के अनुसार सारी व्यवस्थाएँ रहती हैं। इस बार आयोजित शिविरों में सिंगल यूज़ प्लास्टिक को बैन किया गया। प्रतिभागी स्वयंसेवकों के लिए मोबाइल या टैब का प्रयोग भी वर्जित किया गया।

शिविर गतिविधियाँ

एनएसएस शिविर का मुख्य आकर्षण इसकी गतिविधियाँ रहती हैं। गतिविधियों में काफी नियमितता रहती है। गतिविधियों में जहाँ विशेषज्ञों द्वारा व्यक्तित्व विकास संबंधी विषयों पर वक्तव्य दिया जाते हैं, वहीं सामूहिक खेल, विविध प्रतियोगिताएँ, सांस्कृतिक संध्या में लोकगीतों व लोकनृत्य की प्रस्तुति से स्वयंसेवक भरपूर मनोरंजन करते हैं। प्रथम दिवस आमतौर पर हवन से शिविर का शुभारंभ किया जाता है। हवन प्रकृति व पर्यावरण के लिए अत्यंत आवश्यक है। हवन में बोली जाने वाली वेद की ऋचा 'इदं न मम' का अंग्रेजी पर्याय 'नॉट मी, बट यू' हमारे एनएसएस का ध्येय वाक्य है।

शिविर की गतिविधियों में सक्रिय भागीदारी कर स्वयंसेवक स्वास्थ्य रक्षा, नेतृत्व क्षमता, सहयोग की भावना, निर्णय लेने की क्षमता, प्रबंधन, अभिव्यक्ति, कौशलों में वृद्धि के जीवन उपयोगी सूत्र सीखते हैं। प्रतिदिन 5-00 बजे उठना, सामूहिक योग-प्राणायाम-ध्यान करना, समय पर सभा में उपस्थित रहना, नियत समय पर जलपान व भोजन करना, सामूहिक खेलों व गतिविधियों में भागीदारी करना, सांस्कृतिक संध्या प्रस्तुति देना, सोने से पहले डायरी लिखना तथा रात्रि 10-00 बजे सो जाने के नियमित क्रियाकलाप से स्वयंसेवक शारीरिक-मानसिक रूप से मजबूत होकर भावी जीवन की तैयारी करना सीखते हैं। दिन की शुरुआत लक्ष्य-गीत, पूर्व दिवस की रिपोर्ट प्रस्तुत करने के साथ तथा हर सत्र या वक्तव्य के बाद चेतना-गीत की प्रस्तुति रोचकता बनाए रखती है।

सामाजिक सरोकारों से संवाद

राष्ट्रीय सेवा योजना का उद्देश्य समुदाय की सेवा के साथ व्यक्तित्व विकास करना है, इसी कारण शिविर में युवाओं से जुड़े विषय, समाज से जुड़े मामले, सामाजिक सरोकारों पर चिंतन, पर्यावरण व मानवता के समक्ष चुनौतियाँ व उनके संभावित समाधान, महापुरुषों के प्रेरक

प्रसंग, राष्ट्र निर्माण में युवाओं की भूमिका आदि विषयों पर विशेषज्ञ वक्ताओं, संसाधन व्यक्तियों द्वारा प्रेरक वक्तव्य प्रस्तुत किए जाते हैं। इन सभी की जानकारी स्वयंसेवक को समाज के लिए एक सजग, स्वस्थ, सशक्त, स्वावलंबी व आदर्श नागरिक बनाने का मार्ग प्रशस्त करती है। पर्यावरण, जल-संरक्षण, पौधरोपण, रक्त दान, नेत्रदान, सड़क-सुरक्षा, कौशल विकास, साइबर अपराध, नशे की लत, प्राथमिक चिकित्सा, आपदा-प्रबंधन, तनाव मुक्ति आदि सामाजिक व प्रासंगिक विषयों पर स्वयंसेवक विशेषज्ञों से जानकारी लेते हैं तथा उनसे संवाद करते हैं। सभी स्वयंसेवकों को महापुरुषों, क्रांतिकारियों, चुनौतियों का सामना कर जीत हासिल करने वाले महान व्यक्तियों के प्रेरक-प्रसंग सुनाए जाते हैं, जिनसे स्वयंसेवकों में भारतीय संस्कृति, इतिहास, धरोहर पर गर्व कर सकने योग्य आत्मविश्वास प्राप्त होता है।

अनुशासन व आत्मनिर्भरता

शिविर में आयोजित गतिविधियों व विषयों की जानकारी स्वयंसेवक सुनकर, देख कर समझते हैं तथा अपने सहपाठियों घर-परिवार, आस-पड़ोस में साझा करते हैं। शिविर की प्रत्येक गतिविधि उद्देश्यपूर्ण होती है और

युवा बनते हैं कर्तव्यनिष्ठ, संवेदनशील तथा उपयोगी नागरिक

राष्ट्रीय सेवा योजना विद्यार्थियों को सृजनात्मक एवं रचनात्मक कार्यों के प्रति प्रेरित कर समाज सेवा का अवसर प्रदान करती है और उनके व्यक्तित्व को निखारने एवं भविष्य में उन्हें कर्तव्यनिष्ठ, संवेदनशील तथा उपयोगी नागरिक के रूप में सँवारने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभा रही है। राष्ट्रीय सेवा योजना विद्यार्थियों को समाज से जोड़ने का काम करती है। इस कार्यक्रम में देश की युवा आबादी शामिल है। इन स्वयंसेवकों के युवा खून में बहुत जोश है। वे अपने देश के लिए कुछ करना चाहते हैं। एनएसएस से जुड़कर वे देश के विकास में मदद करते हैं। इससे स्वयंसेवकों के समग्र विकास में मदद मिलती है। एनएसएस गतिविधियों में भाग लेने से स्वयंसेवक आत्मविश्वास से लबरेज होते हैं। वे किसी कार्य को पूरा करने के लिए जानते हैं कि योजनाएँ कैसे बनानी चाहिए। उनमें सार्वजनिक रूप से बोलने, धन जुटाने, दूसरों को शिक्षित करने, प्रबंधन आदि जैसे कौशल विकसित होते हैं। भले ही वे किसी कार्य में असफल हों, उन्हें अपनी असफलताओं से सीखने को मिलता है। उनकी समझ का स्तर बेहतर होता है। वे समाज तथा उसकी समस्याओं को बेहतर ढंग से समझ सकते हैं। उन्हें पता चलता है कि हमारा देश किन समस्याओं से जूझ रहा है। विद्यार्थियों की ऊर्जा का उचित उपयोग एनएसएस की गतिविधियों के माध्यम से किया जा सकता है। इस कार्यक्रम के माध्यम से विद्यार्थियों की सकारात्मक सोच विकसित होती है। एनएसएस सभी युवाओं के लिए आवश्यक है।

सुमन मलिक
गणित अध्यापिका
राजकीय उच्च विद्यालय आहुलाना
सोनीपत, हरियाणा

उसमें स्वयंसेवकों का अनुशासन सहज ही झलकता है। स्वयंसेवक, कार्यक्रम अधिकारी व आमंत्रित अतिथि महोदय एक साथ, एक जैसा जलपान या भोजन ग्रहण करते हैं। अपने बर्तन स्वयं धोने, अपना बिस्तर स्वयं लगाने तथा शिविर परिसर को स्वच्छ रखने के कार्यों से सभी स्वयंसेवक आत्मानुशासन व आत्मनिर्भरता का पाठ सीखते हैं।

विशिष्ट विभूतियों से संवाद

राज्य सरकार के मंत्री, शिक्षा विभाग के निदेशक, राज्य एनएसएस अधिकारी, मंडलायुक्त, जिला उपायुक्त, पुलिस अधीक्षक, जिला शिक्षा अधिकारी, विश्वविद्यालयों के प्रोफेसर या साहित्य, कला, तकनीक आदि अन्य किसी भी क्षेत्र की विशिष्ट विभूति से मिलना, संवाद करना, उनके साथ फोटो लेना, उनके संघर्ष की, उनकी सफलता की कहानी जानने का अवसर भी शिविर के प्रतिभागियों को मिलता है, निश्चित तौर पर यह उनके लिए काफी लाभकारी होता है। शिविर में स्वयंसेवकों की जिज्ञासा रहती है कि आज किस विशिष्ट व्यक्ति से किस विषय पर चर्चा होगी। स्वयंसेवक शिविर में आमंत्रित विशिष्ट विभूतियों से ऑटोग्राफ लेना व उनके साथ फोटो करवाना नहीं भूलते।

सामूहिक खेल प्रतियोगिताएँ

खेल व अन्य शारीरिक क्रियाएँ छात्रों के लिए बहुत जरूरी हैं। वर्तमान में तकनीकी यंत्रों व मोबाइल की सुलभता के कारण मैदानी खेल कम हो गए हैं। किसी भी स्तर के एनएसएस शिविर में विशेष खेलों की अनिवार्यता रहती है। संध्या के समय आयोजित खेलों में मनोरंजन के साथ सामूहिकता, एकता की भावना, संदेश, एकाग्रता, चुनौतियाँ व उनके संभावित समाधान पर खोजबीन, इंद्रियों की सक्रियता-तीव्रता आदि को ध्यान में रखकर खेलों का आयोजन करवाया जाता है। ग्रामीण क्षेत्रों में खेले जाने वाले पुराने सामूहिक, बौद्धिक तथा शारीरिक बलवर्धक खेल भी शिविर में खिलाए जाते हैं। इनमें भागीदारी करना तथा सर्वश्रेष्ठ रहने का प्रयास सभी स्वयंसेवकों की चाहत होती है।

सांस्कृतिक संध्या

दिनभर की गतिविधियों व कार्यों के उपरांत स्वयंसेवकों की थकान दूर करने, उनका मनोरंजन करने हेतु व स्वस्थ प्रतियोगिता के माध्यम से लुप्त हो रही लोक कला, नृत्य, संगीत की प्रस्तुति हेतु प्रतिदिन सांस्कृतिक संध्या का आयोजन किया जाता है। शिविर में भागीदारी से पहले ही स्वयंसेवक इसकी तैयारी करते हैं तथा प्रस्तुति के लिए उपयुक्त गणवेश साथ लेकर आते हैं। सांस्कृतिक संध्या में विभिन्न राज्यों की लोक-कला व संस्कृति के दर्शन होते हैं तथा स्वयंसेवक इन्हें आपस में सीखते व समझते हैं। शिविर में आयोजनकर्ताओं द्वारा स्थानीय लोक कलाकार को शिविर में आमंत्रित कर कलाओं की जानकारी भी दिलवाई जाती है।

भ्रमण

शिविर स्थल के आसपास गाँव या शहर में कोई न कोई ऐतिहासिक, पौराणिक, पर्यटक स्थल या सार्वजनिक स्थल जरूर होता है।

शिविर के दौरान एक या दो दिन स्वयंसेवकों को उस स्थान का भ्रमण करवाया जाता है। स्वयंसेवक उसके महत्त्व को समझते हैं तथा अपनी डायरी में उसके बारे में लिखते हैं। अपने भ्रमण के दौरान स्वयंसेवक उस स्थान पर स्वच्छता कार्य या सेवा कार्य संपन्न करके लोगों को श्रम के महत्त्व का संदेश देकर आते हैं। शिविर समापन के बाद भ्रमण किए जाने वाले स्थान के बारे में अपने सहपाठियों, परिजनों में पूरे साल चर्चा रहती है।

जन जागरूकता रैली

किसी भी शिविर के समापन अवसर पर एनएसएस स्वयंसेवकों तथा कार्यक्रम अधिकारियों द्वारा लोगों को सामाजिक व मानवीय विषयों के प्रति जागरूक करने के उद्देश्य से जन-जागरूकता रैली निकाली जाती है। जन-जागरूकता रैली ग्रामीणों या नगरवासियों के लिए

आकर्षण का केंद्र होती है। सभी स्वयंसेवक अपने हाथों में सामाजिक विषयों से संबंधित स्लोगन लिखे बैनर लेकर, स्लोगन का जयघोष करते हुए पंक्ति बद्ध होकर गाँव-शहर के मुख्य मार्गों से गुज़रते हुए लोगों को सामाजिक विषयों के प्रति जागरूक करते हैं। कुछ मुख्य स्थानों पर स्वयंसेवक नुक्कड़ नाटिकाओं का प्रदर्शन भी करते हैं। केंद्र और राज्य की विभिन्न योजनाओं की जानकारी तथा सामाजिक सरोकारों के संरक्षण के प्रचार-प्रसार में जन-जागरूकता रैली की प्रमुख भूमिका रहती है। जन-जागरूकता रैली को किसी प्रसिद्ध विभूति के द्वारा हरी झंडी दिखाकर रवाना किया जाता है। रैली के मुख्य विषय जलसंरक्षण, पर्यावरण संरक्षण, नशामुक्ति , पौधरोपण, सिंगल यूज प्लास्टिक आदि रहते हैं।

अविस्मरणीय स्मृतियाँ व अनुभव

शिविर समापन से पहले छात्रों की डायरी का आकलन किया जाता है। डायरी में लगभग हर स्वयंसेवक अपनी दैनिक गतिविधियों व अनुभव को जीवन में कभी न भुला पाने वाला बताते हैं। विभिन्न विषयों के ज्ञानार्जन के साथ अधिकारियों से मिलना, शिविर में नए मित्र बनाना, विभिन्न गतिविधियों में स्वयं की भागीदारी से शिविर स्वयंसेवकों के लिए अविस्मरणीय बन जाता है।

समापन समारोह

सात दिवसीय एनएसएस शिविरों का समापन समारोह बहुत शानदार होता है। समापन के अवसर पर शिविर के दौरान विविध गतिविधियों में भागीदारी कर श्रेष्ठ रहने वाले स्वयंसेवकों को पुरस्कृत किया जाता है। सर्वश्रेष्ठ स्वयंसेवक, स्वयंसेविका, सर्वश्रेष्ठ डायरी लेखन व अन्य प्रतियोगिताओं के विजेता स्वयंसेवक मुख्य-अतिथि के हाथों पुरस्कृत होकर धन्य हो जाते हैं। समापन अवसर पर सर्वधर्म प्रार्थना का आयोजन होता है तो कहीं किसी विशेष विचार या कार्य के संकल्प के साथ समापन होता है। विदाई के क्षण अत्यंत मार्मिक होते हैं। विभिन्न विद्यालयों, गाँवों, जिलों या राज्यों से पधारे स्वयंसेवक व कार्यक्रम अधिकारी सात दिवसीय शिविर के दौरान इतने घनिष्ठ हो जाते हैं कि विदाई के समय उनकी आँखों में नमी स्पष्ट दिखाई पड़ती है।

गाँवों में गूँजी एनएसएस शिविरों की गूँज

जिले या राज्य स्तरीय शिविरों में भागीदारी करने वाले स्वयंसेवकों में सर्वाधिक संख्या ग्रामीण छात्रों की रही। भूना में आयोजित राज्य स्तरीय शिविर के समापन के बाद हिसार, सिरसा, फतेहाबाद व कैथल के स्वयंसेवकों ने अपने-अपने गाँवों व घर तक एनएसएस की कैप, टी-शर्ट और जीते हुए मेडल नहीं उतारे। स्वयंसेवकों का कहना था कि एनएसएस शिविर ने हमें अवर्णनीय तथा अमूल्य अनुभव दिए हैं, इसलिए हम यात्रा के दौरान सभी यात्रियों व हमारे गाँव के लोगों तक एनएसएस का संदेश पहुँचाने के उद्देश्य से ऐसा कर रहे हैं। ग्रीष्म-अवकाश के बाद कई विद्यालयों में पंचायतों व समाजसेवी संस्थाओं द्वारा शिविर में भागीदारी करने वाले स्वयंसेवकों व कार्यक्रम अधिकारियों को सम्मानित किया गया।

इस प्रकार राष्ट्रीय सेवा योजना के शिविरों के माध्यम से युवा शक्ति का सदुपयोग समाज और राष्ट्र की बेहतरी के लिए विभिन्न गतिविधियों के माध्यम से शिक्षा विभाग द्वारा निरंतर किया जा रहा है। इन शिविरों का लाभ हर स्वयंसेवक अपने व्यक्तित्व विकास करने के साथ-साथ कैरियर निर्माण, ज्ञानार्जन व भावी जीवन की तैयारी में भी ले रहा है।

- प्रवक्ता व एनएसएस कार्यक्रम अधिकारी
राजकीय आदर्श संस्कृति वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय
नलवा, जिला हिसार, हरियाणा

कभी न भुला पाऊँगी शिविर की यादें

मुझे राज्य स्तरीय शिविर भूना में जाने का अवसर मिला। मैं पहली बार घर से दूर रही। पहले दिन तो मेरा मन नहीं लगा, लेकिन जल्दी ही शिविर की गतिविधियों में मेरा मन लग गया। शिविर के दौरान हम शिक्षा विभाग के निदेशक अशोक गर्ग, फतेहाबाद की डीसी महोदया, जिला शिक्षा अधिकारी फतेहाबाद, प्रिंसिपल नरेश शर्मा व अन्य अधिकारियों से मिले तथा उनसे बात की। शिविर की व्यवस्था बहुत अच्छी थी। यहाँ बहुत स्वादिष्ट भोजन बनता था, रहने की बहुत अच्छी व्यवस्था थी। हमें ऐतिहासिक स्थल कुणाल व परमाणु केंद्र गोरखपुर का भ्रमण करवाया गया। भूना विद्यालय बहुत सुंदर है। हमने वहाँ पर कबाड़ से जुगाड़ के सुंदर नमूने बनाए। मुझे खेल प्रतियोगिता में पदक मिला और हमारे विद्यालय को कुल 12 पदक मिले। स्कूल खुलने पर हमारे गाँव के उद्योगपति श्री राजेंद्र गुप्ता ने सभी स्वयंसेवकों को सम्मानित किया। इस एनएसएस शिविर का अनुभव मैं जीवन भर भूल नहीं सकूँगी।

- मोनिका, एनएसएस स्वयंसेविका
नलवा। (राज्य शिविर भूना की प्रतिभागी)

ज़िम्मेदार नागरिक तैयार करती है 'राष्ट्रीय सेवा योजना'

सुरेश राणा

विद्यार्थी देश का भविष्य हैं। यदि उन्हें उचित शिक्षा और सही मार्गदर्शन मिलेगा तो देश के लिए उच्चकोटि के नागरिक तैयार होंगे। अतः हमारी शिक्षा प्रणाली ऐसी होनी चाहिए जो विद्यार्थियों का सर्वांगीण विकास कर सके। शैक्षिक गतिविधियों के साथ साथ सहगामी क्रियाएँ भी अत्यंत आवश्यक हैं। शिक्षा-विभाग द्वारा अनेक सहगामी गतिविधियों का आयोजन किया जाता है। राष्ट्रीय सेवा योजना (National Service Scheme) मुख्यतौर पर विद्यार्थियों में सामाजिक कार्यों के जरिए देश के निर्माण के प्रति भागीदारी की भावना को विकसित करने के उद्देश्य से शुरू की गई थी। उन्हें सामाजिक सहभागिता के माध्यम से राष्ट्र विकास के कार्यक्रमों में भागीदारी का बोध होता है।

राष्ट्रीय सेवा योजना भारत सरकार, युवा मामलों और खेल मंत्रालय की एक केंद्रीय योजना है, जिसे औपचारिक रूप से 24 सितंबर, 1969 को शुरू किया गया था। यह सरकारी और गैरसरकारी शिक्षण संस्थानों में अध्ययन करने वाले युवाओं को खुद को निखारने हेतु सुनहरा अवसर प्रदान करती है। विद्यार्थी अनेक सामुदायिक सेवा गतिविधियों और कार्यक्रमों में भाग लेते हैं। वे समाज को सही ढंग से समझते हैं और समाज को उचित दिशा प्रदान

करते हैं। विभिन्न गतिविधियों में भाग लेने वाले विद्यार्थी समाज के लोगों के साथ मिलकर समाज-हित के कार्य करते हैं। उनके कार्यों में साक्षरता संबंधी कार्य, पर्यावरण सुरक्षा, स्वास्थ्य एवं सफाई, आपातकालीन या प्राकृतिक आपदा के समय पीड़ित लोगों की सहायता आदि शामिल होते हैं। विद्यार्थी जीवन से ही समाजपयोगी कार्यों में लगे रहने से उनमें समाज सेवा तथा राष्ट्र सेवा के गुणों का विकास होता है।

राष्ट्रीय सेवा योजना कार्यक्रम से स्कूल में पढ़ने वाले ग्यारहवीं एवम् बारहवीं कक्षा के विद्यार्थी, तकनीकी संस्थाओं के युवा विद्यार्थी, कॉलेज एवं स्नातक और स्नातकोत्तर विद्यार्थियों को विभिन्न सामाजिक क्रियाओं और कार्यक्रमों में भाग लेने का अवसर प्राप्त करते हैं। राष्ट्रीय सेवा योजना का मूल उद्देश्य युवा छात्रों को सामुदायिक सेवा देने में अनुभव प्रदान करना है। राष्ट्रीय सेवा योजना के मुख्य उद्देश्य निम्नलिखित हैं-

(1) समुदाय को समझना जिसमें वे काम करते हैं।
(2) समुदाय की तुलना में स्वयं को समझना।
(3) समुदाय की जरूरतों और समस्याओं की पहचान करना और उन्हें समस्या के समाधान की प्रक्रिया में भागीदार बनाना।
(4) स्वयं में सामाजिक और नागरिक जिम्मेदारी का बोध विकसित करना।
(5) व्यक्तिगत और समुदाय की समस्याओं का व्यावहारिक समाधान ढूँढ़ने में उनके ज्ञान का उपयोग करना।
(6) समूह में रहने और जिम्मेदारियों को बाँटने के लिए

अविस्मणीय बन गया एनएसएस राष्ट्रीय एकता शिविर

मैंने कैथल में आयोजित एनएसएस राष्ट्रीय एकता शिविर में भाग लिया। यह शिविर मुझे जीवन भर याद रहेगा। अन्य राज्यों के स्वयंसेवकों के माध्यम से मुझे वहाँ की बोली, भाषा, संस्कृति, रहन-सहन आदि की जानकारी प्राप्त हुई। इससे पहले मैंने जिला स्तरीय शिविर आदमपुर की गतिविधियों में अनेक प्रतियोगिताओं में भाग लिया और उनमें मैंने पाँच पदक जीते। मैं हमारे विद्यालय के कार्यक्रम अधिकारी अशोक वशिष्ठ व मेरी माता जी को धन्यवाद देती हूँ, जिन्होंने मुझे ऐसा अवसर प्रदान किया।

-तमन्ना, छात्रा
राजकीय मॉडल संस्कृति वरिष्ठ
माध्यमिक विद्यालय नलवा, जिला- हिसार, हरियाणा

जरूरी क्षमता विकसित करना।

(7) समुदाय सहभागिता जुटाने में कौशल अर्जित करना।

(8) नेतृत्व गुण और लोकतांत्रिक प्रवृत्ति विकसित करना।

(9) आपातकालीन स्थितियों और प्राकृतिक आपदाओं से निपटने की क्षमता विकसित करना।

(10) राष्ट्रीय अखण्डता और सामाजिक सद्भावना बनाए रखना।

राष्ट्रीय सेवा योजना का आदर्श वाक्य

सेवा योजना का आदर्श वाक्य है- 'मुझसे पहले आप' (Not Me But You) यह लोकतांत्रिक जीवन के सार को दर्शाता है और आत्म-विहीन सेवा की आवश्यकता को बरकरार रखता है। इससे निःस्वार्थ से भाव से दूसरे मनुष्यों के प्रति चिंता करने की आवश्यकता को बल मिलता है। इससे यह आभास होता है कि किसी व्यक्ति का कल्याण समग्र रूप से समाज के कल्याण पर निर्भर करता है। एनएसएस विद्यार्थियों को अन्य व्यक्ति के दृष्टिकोण के विकास और प्रशंसा में मदद करता है। खुद से पहले हमें दूसरों को प्राथमिकता देनी चाहिए। यदि हम एक-दूसरों का ख्याल रखेंगे तो यह धरती स्वर्ग बन जायेगी।

राष्ट्रीय सेवा योजना प्रतीक चिह्न

एनएसएस का प्रतीक-चिह्न भारत के उड़ीसा में स्थित विश्व प्रसिद्ध कोणार्क सूर्य मंदिर के विशालकाय रथ के पहिए पर आधारित है। सूर्य मंदिर के इन विशाल पहियों में सृष्टि, परिरक्षण और मुक्ति के चक्र को दर्शाया गया है। यह संपूर्ण काल और स्थान में जीवन के चलने का संकेत है। सूर्य रथ पहिए के सरल रूप में इस चिह्न के डिज़ाइन में मुख्यतः जीवन की यात्रा को चित्रित किया गया है। यह पहिया जीवन के प्रगतिशील चक्र का द्योतक है। यह निरंतरता और परिवर्तन का प्रतीक भी है और सामाजिक बदलाव तथा उत्थान के लिए राष्ट्रीय सेवा योजना के सतत प्रयास का परिचायक है। इस लोगो में निहित लाल और नीले रंग एनएसएस स्वयंसेवकों को राष्ट्र-निर्माण, सामाजिक गतिविधियों के लिए सक्रिय और ऊर्जावान होने के लिए प्रेरित करते हैं। पहिया निरंतरता के साथ-साथ परिवर्तन के लिए खड़ा है और सामाजिक परिवर्तन के लिए एनएसएस के निरंतर प्रयास का प्रतीक है।

राष्ट्रीय सेवा योजना बैज

राष्ट्रीय सेवा योजना के स्वयंसेवक जब सेवाकार्य करते हैं तो वे इस बैज को पहनते हैं। इसके चिह्न में कोणार्क पहिए में आठ छड़ें हैं जो दिन के 24 घंटों को दर्शाती हैं। अतः यह बैजधारक को दिन-रात राष्ट्र की सेवा में तत्पर रहने की याद दिलाता है। बैज में लाल रंग इस बात का संकेत है कि राष्ट्रीय सेवा योजना के स्वयंसेवक जीवंतता से परिपूर्ण हैं, अर्थात् उनमें जीवंतता, स्फूर्ति, ऊर्जा है और वे सेवा की भावना से ओतप्रोत हैं। नीला रंग ब्रह्मांड का प्रतीक है, जिसका एनएसएस एक छोटा-अंश है जो मानव जाति के कल्याण के लिए अपना योगदान देने के लिए हमेशा तैयार है।

राष्ट्रीय सेवा योजना के तहत गतिविधियाँ

राष्ट्रीय सेवा योजना के अंतर्गत विद्यार्थी स्वेच्छा से समाजोपयोगी गतिविधियों में भाग लेते हैं। विद्यालय, कॉलेज, विश्वविद्यालय स्तर पर समय-समय पर अनेक कार्यक्रम आयोजित होते हैं। गहन विकास कार्य के लिए गाँव गोद लेना, चिकित्सा तथा सामाजिक सर्वेक्षण करना, चिकित्सा केंद्र स्थापित करना, व्यापक स्तर पर टीकाकरण कार्यक्रम, स्वच्छता अभियान, प्रौढ़ साक्षरता कार्यक्रम, रक्तदान शिविर, अस्पतालों में मरीजों की सेवा, अनाथालय में अनाथ और दिव्यांगजन की सेवा आदि कार्यक्रमों में स्वयंसेवक भाग लेते हैं। स्वयंसेवक समय-समय पर चक्रवात, बाढ़, अकाल, भूकंप आदि प्राकृतिक आपदाओं के दौरान सराहनीय कार्य करते हैं। स्वयंसेवक सामाजिक बुराइयों के उन्मूलन, राष्ट्रवाद, प्रजातंत्र, धर्म निरपेक्षता, सामाजिक सद्भावना, वैज्ञानिक दृष्टिकोण विकास जैसे राष्ट्रीय स्तर पर स्वीकृत उद्देश्यों को लोकप्रिय बनाने के लिए अनेक अभियान चलाते हैं। मलिन बस्तियों में सफाई अभियान, नामांकन अभियान, समाज जागरूकता अभियान, पौधारोपण, महत्त्वपूर्ण दिवसों पर कार्यक्रम, रैलियाँ, प्रभात फेरियाँ, राष्ट्रीय

दिवसों पर कार्यक्रम, परेड में प्रतिभागिता आदि कार्यकमों और गतिविधियों में भी स्वयंसेवक भाग लेते हैं। विद्यार्थियों के लिए तीन एक दिवसीय शिविर और एक विशेष दस दिवसीय आवासीय शिविर में भाग लेना आवश्यक है। राष्ट्रीय सेवा योजना में स्वयंसेवक को दो साल की अवधि में कुल 240 घंटे की सामाजिक सेवा समर्पित करना आवश्यक है। राष्ट्रीय सेवा योजना में स्वयंसेवक को प्रति वर्ष 20 घंटे उन्मुखीकरण और 100 घंटे सामुदायिक सेवा में देने पड़ते हैं। इन सामान्य गतिविधियों के अलावा स्वयंसेवक निम्नलिखित गतिविधियों में भाग ले सकते हैं-

1. राष्ट्रीय एकता शिविर

राष्ट्रीय एकता शिविर (एनआईसी) हर साल आयोजित किया जाता है और प्रत्येक शिविर की अवधि दिन-रात बोर्डिंग और लॉजिंग (आना जाना और रुकना) के साथ सात दिन का होता है। इस शिविर में विभिन्न प्रांतों के स्वयंसेवक भाग लेते हैं। इनमें प्रदेशों की संस्कृति का आदान-प्रदान होता है। यहाँ लघु भारत का विहंगम दृश्य दिखाई देता है। इससे राष्ट्रीय एकता को बढ़ावा मिलता है।

2.साहसिक कार्यक्रम

ये कार्यक्रम हर साल आयोजित किए जाते हैं, जिनमें लगभग 1500 राष्ट्रीय सेवा योजना स्वयंसेवक भाग लेते हैं, जिनमें से कम से कम पचास प्रतिशत स्वयंसेवक लड़कियाँ होती हैं। ये शिविर उत्तरी पूर्व क्षेत्र अरुणाचल प्रदेश और हिमालयी क्षेत्र में आयोजित किए जाते हैं। हरियाणा के स्कूली विद्यार्थियों ने इस सत्र में आयोजित साहसिक कार्यक्रमों में भाग लिया, जो मनाली में आयोजित किए गए थे।

3. गणतंत्र दिवस परेड शिविर

यह शिविर हर साल 1 से 31 जनवरी के मध्य दिल्ली में लगाया जाता है। एनएसएस का यह दल राजपथ पर नई-दिल्ली में गणतंत्र दिवस की परेड में भी शामिल होता है। परेड में एनएसएस के स्वयंसेवकों की टुकड़ी आकर्षण का केंद्र होती है।

4. राष्ट्रीय युवा महोत्सव

देश के विभिन्न हिस्सों में राज्य सरकारों के सहयोग से राष्ट्रीय युवा महोत्सव हर साल 12 से 16 जनवरी तक भारत-सरकार के युवा मामलों और खेल-मंत्रालय द्वारा आयोजित किए जाता है, जिसमें एनएसएस के स्वयंसेवक भाग लेते हैं।

एनएसएस स्वयंसेवी होने के लाभ

राष्ट्रीय सेवा योजना के कार्यक्रम विद्यार्थियों का बहुआयामी विकास करती है। युवा विद्यार्थी राष्ट्रीय सेवा योजना से जुड़ते हैं, उनका चारित्रिक विकास होता है। शिविरों में वे अपने सभी कार्य खुद ही करते हैं, जिससे वे आत्मनिर्भर बनते हैं। वे सामाजिक कार्यों द्वारा लोगों की सेवा कर सकते हैं। उनमें आत्मविश्वास, धैर्य, साहस, सकारात्मक स्वभाव का विकास होता है। वे समाज में विभिन्न गतिविधियों में भाग लेते हैं, जिससे वे समाज की समस्याओं को यथार्थ रूप में अनुभव करते हैं। वे एक जिम्मेदार नागरिक बनते हैं। जब वे मलिन बस्तियों में काम करते हैं तो उनमें श्रम के प्रति आदर भाव जागृत होता है और दूसरों के प्रति समभाव व समरसता का भाव पैदा होता है। वे मानव स्वभाव को समझते हैं। वे सहभागिता के साथ समूह में कार्य करना सीखते हैं। उनमें देशभक्ति की भावना का संचार होता है। वे अपने देश से, समाज से, जमीन से जुड़े रहते हैं। उनमें नेतृत्व कौशल का विकास होता है। विद्यार्थियों को सशक्तीकरण की शिक्षा मिलती है। आपातकाल या प्राकृतिक आपदा में लोगों की सहायता करने की क्षमता विकसित होती है। स्वयंसेवक उचित समय पर सही निर्णय लेने में सक्षम हो जाते हैं। वास्तव में राष्ट्रीय सेवा योजना शिविर भावी नागरिक तैयार करने की पाठशाला है। वे एक निपुण सामाजिक नेता और एक कुशल प्रशासक बनते हैं।

वर्तमान समय में हमारे देश में तकरीबन 65 प्रतिशत आबादी युवा है। यदि उचित समय पर युवाओं को उचित मार्गदर्शन मिलेगा तो भारत के जिम्मेदार नागरिक तैयार होंगे जो देश के विकास में भी अहम किरदार निभा पाएँगे। राष्ट्रीय सेवा योजना देश के भावी नागरिक तैयार करने में सक्षम है। यह कार्यक्रम सभी स्कूलों में अनिवार्य रूप में लागू किया जाना चाहिए।

हिंदी प्राध्यापक
राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय मुर्तज़ापुर
खण्ड पिहोवा, जिला कुरुक्षेत्र, हरियाणा

आइये हम भी राष्ट्रसेवा के लिए लें शपथ

1. हम भारत को एक विकसित देश बनाने में सहयोग देंगे।
2. हम आदर्श नागरिक बनकर देशवासियों को अनुशासित नागरिक बनाने में सहयोग करेंगे।
3. हम अपने घर को सदाचारपूर्ण बनाने, वातावरण को स्वच्छ रखने और पढ़ाई में और अपने कार्य में श्रेष्ठ प्रदर्शन के लिए अभियान चलाएँगे।
4. समाज में महिलाओं के प्रति हो रहे अन्याय सहित देश में फैली सामाजिक कुरीतियों को दूर करेंगे और महिलाओं को समाज में सम्मानित स्थान दिलाएँगे।
5. ज्ञान और उच्च नैतिक मूल्यों द्वारा समाज से भ्रष्टाचार दूर करेंगे।
6. हम राष्ट्रीय एकता, राष्ट्रीय सुरक्षा और राष्ट्रप्रेम द्वारा देश को मज़बूत बनाएँगे।
7. हम लोगों को कानून का पालन करने वाला नागरिक बनने के लिए प्रेरित करेंगे।
8. हम वनों की कटाई रोकेंगे और पर्यावरण की रक्षा के लिए नए पेड़ लगाएँगे।

कक्षा-शिक्षण को कैसे बनाएँ रोचक व प्रभावशाली

राजेश यादव

भाषा विचारों की अभिव्यक्ति का साधन है। भाषा के द्वारा विचारों को न केवल व्यक्त करना अपितु दूसरों के विचारों को समझना भी अनिवार्य होता है। विद्यालय आने से पूर्व बच्चा एक असीम शब्दकोश, जो उसने अपने परिवार व परिवेश से अर्जित किया है, उसे वह साथ लेकर आता है। विद्यालय आकर कक्षा-कक्ष में अध्यापक व सहपाठियों के सान्निध्य में उसकी सीखने की प्रक्रिया निरन्तर प्रगति की ओर अग्रसर होती है। कक्षा -शिक्षण के दौरान सीखने-सिखाने की प्रक्रिया अध्यापक व बच्चों की प्रतिभागिता का मापदंड निर्धारित करती है। विद्यालय आने के बाद उसने कितना सीखा और कितना और सीखने की आवश्यकता है, यह प्रश्न अध्यापक और अभिभावक के सामने किसी चुनौती से कम नहीं। प्रत्येक अध्यापक के सामने कक्षावार व विषयवार कुछ निर्धारित मापदंड होते हैं, जिन्हें वर्ष के अंत तक उसी कक्षा यानि नई कक्षा में जाने से पूर्व पूरा करना विद्यार्थी के लिए अनिवार्य है। इसके लिए अध्यापकों को बच्चों के सामाजिक, पारिवारिक व मनोवैज्ञानिक परिवेश से जुड़कर उनसे जुड़े अपने अनुभव अपनी भाषा में स्वतंत्र रूप से अभिव्यक्त करने का अवसर उपलब्ध कराना होगा। बच्चे जिस वातावरण में रह रहे हैं, उसके बारे में अपनी समझ व ज्ञान का निर्माण तो वे स्वयं करते हैं लेकिन कक्षा-कक्ष में विधानुसार अभिव्यक्ति का अवसर देकर उन्हें विस्तार देना अध्यापक का नैतिक दायित्व बनता है।

कक्षा-शिक्षण के दौरान जो बच्चे कम रुचि दिखाते हैं, उन्हें समूह में बैठाकर उनकी भी प्रतिभागिता सुनिश्चित करनी होती है। कक्षा के स्तरानुसार सभी भाषायी कौशलों (सुनना, बोलना, पढ़ना, लिखना व रचना कौशल) को दृष्टिगत करते हुए व अपेक्षित योग्यताएँ अर्जित करने हेतु गतिविधि आधारित शिक्षण अनिवार्य है। सुनना, केवल सुनना ही नहीं, अपितु सुनकर सही अर्थ ग्रहण करते हुए विषय संबंधी अपनी प्रतिक्रिया देना, इसी प्रकार पढ़ना, केवल पढ़ना नहीं अपितु पढ़कर समझना उससे संबंधित प्रश्न करना, तर्क देना, प्रतिक्रिया करना और अपनी समझ से अभिव्यक्ति करना है, तभी सही मायने में सुनना व बोलना कौशल की उपलब्धि अर्जित मानी जाएगी। लिखना कौशल की बात की जाए तो लिखना सही मायने में तभी सार्थक होगा, जब बच्चे अपनी भाषा में अपनी कल्पना को उड़ान देते हुए स्वतंत्र रूप से मौलिक वाक्यों के माध्यम से अभिव्यक्ति करने में पूर्ण रूप से समर्थ हो सकें। अपनी रोजमर्रा की जिंदगी में पढ़ने-लिखने का इस्तेमाल कर सकें, बच्चे स्कूल के सूचना पट्ट पर लिखी सामग्री को पढ़ने, विद्यालय में आयोजित समारोह की रिपोर्ट या अपनी दैनिक अनुभवों को लिखने योग्य हो जाएँ तो मानो उनका शैक्षिक विकास सही दिशा में हो रहा है।

भाषा के बोलने, लिखने, सुनने, समझने में प्रायः बच्चे अशुद्धि करते हैं, लेकिन बोलने व लिखने की अशुद्धि ज्यादा दृष्टिगत होती है। सुनने व समझने की बात अप्रत्यक्ष रहती है। उच्चारण व वर्तनीगत अशुद्धि तुरन्त पकड़ में आ जाती है। इनके सुधार के लिए वर्णमाला, मात्रा ज्ञान, उच्चारण स्थान के साथ-साथ विराम चिह्नों की जानकारी अति आवश्यक है। शब्द, पद, वाक्य, संधि, समास, लिंग, वचन, कारक आदि का ज्ञान कराकर इन अशुद्धियों का निवारण किया जा सकता है। भाषा शिक्षण को प्रभावी बनाने के लिए मुहावरे व लोकोक्तियों की जानकारी भी आवश्यक है। भाषा कौशल जितना समृद्ध होगा, उतना ही प्रस्तुतीकरण प्रभावी होगा।

बच्चों में व्याकरण की सचेत समझ बनाने के लिए उसके विभिन्न पहलुओं की पहचान विविध पाठों के संदर्भ में और आस-पास के परिवेश से जोड़कर कराई जाए तो अध्यापक को निर्धारित लक्ष्य की अवश्य प्राप्ति होगी। उन्हें भाषा की बारीकियों पर अपनी पकड़ मजबूत करनी होगी, क्योंकि भाषा के सभी कौशल परस्पर एक दूसरे से जुड़े हुए हैं और एक दूसरे के विकास में सहायक हैं। अतः अध्यापक को यह समझना होगा कि एक पाठ चाहे किसी भी विधा का हो उसका शिक्षण करवाने के उपरांत शिक्षक को एक से अधिक भाषा क्षमताओं की प्राप्ति सहज रूप से हो सकती है।

विद्यालय में आने पर बच्चे प्रायः स्वयं को बेझिझक अभिव्यक्त करने में असमर्थ पाते हैं, क्योंकि जिस भाषा में वे सहज रूप से अपनी राय, अनुभव, भावनाएँ आदि व्यक्त करना चाहते हैं, वह विद्यालय में प्रायः स्वीकृत नहीं होतीं। भाषा-शिक्षण को बहुभाषी संदर्भ में रखकर देखने की आवश्यकता है। कक्षा में बच्चे अलग-अलग भाषायी-सांस्कृतिक पृष्ठभूमि से आते हैं। कक्षा में इनकी भाषाओं का स्वागत किया जाना चाहिए, क्योंकि बच्चों की भाषा को नकारने का अर्थ है- उनकी अस्मिता को नकारना। ऐसी स्थिति में बहुभाषिकता को भी कक्षा-कक्ष में स्थान देने की आवश्यकता है।

शिक्षण प्रक्रिया में शिक्षण अधिगम सहायक सामग्री की मुख्य भूमिका होती है। शिक्षण सहायक सामग्री को अंग्रेजी में टीएलएम भी कहते हैं। टीएलएम का अर्थ- टीचिंग लर्निंग मैटीरियल। अध्यापन के दौरान पाठ्य सामग्री को समझाते हुए शिक्षक जिन-जिन सामग्रियों को उपयोग में लाता है, वे ही सहायक सामग्री कहलाती हैं। हर शिक्षक की यह प्रबल इच्छा होती है कि उसका शिक्षण प्रभावशाली हो तथा बच्चे सन्तुष्ट हों। शिक्षण सहायक सामग्री का प्रयोग करके पढ़ाने से बच्चों की सीखने में रुचि जागृत होती है। सीखने की प्रक्रिया तो रुचिकर बनती है साथ ही सीखा गया ज्ञान स्थायी होता है। शिक्षण सहायक सामग्री अध्यापक के आत्मविश्वास को बढ़ाती है। इससे बच्चे का मानसिक विकास होता है, तार्किक शक्ति बढ़ती है। वे क्रियाशील रहते हैं। इस प्रकार प्रत्येक शिक्षक अपने कक्षा-शिक्षण को रोचक व प्रभावशाली बना सकते हैं।

विषय विशेषज्ञ
एससीईआरटी हरियाणा, गुरुग्राम

किचन गार्डन की सब्जियों से बन रहा है मिड-डे मील

बढ़ती महँगाई का हवाला देते हुए अधिकतर अध्यापक और मिड-डे मील कुक गाहे-बगाहे मिड-डे मील के लिए अधिक राशि जारी करने की माँग करते रहते हैं। ऐसे में अंबाला जिले के ही दो अध्यापकों नीलम रानी और सुरेंद्र सिंह ने ऐसे लोगों को अपने अपने विद्यालयों में किचन गार्डन विकसित कर नई राह दिखाई है।

जिला मौलिक शिक्षा अधिकारी सुधीर कालड़ा ने अपने कार्यालय में इन दोनों अध्यापकों नीलम रानी, प्रभारी राजकीय प्राथमिक पाठशाला रूपा माजरा खंड अंबाला-1 और सुरेंद्र सिंह, पंजाबी अध्यापक राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय केसरी, खंड साहा को अपने अपने स्कूल में किचन गार्डन विकसित करने के लिए सम्मानित भी किया। इन दोनों अध्यापकों द्वारा अपने-अपने स्कूलों में बेहतरीन ढंग से किचन गार्डन का निर्माण किया गया है और उसमें उगी सब्जियों का इस्तेमाल बच्चों के लिए मिड-डे मील में बनाए जाने वाले विभिन्न व्यंजनों में किया जा रहा है। इन स्कूलों में अब बच्चों को विद्यालय में ही उगाई गई ताज़ी सब्जियों से बना पौष्टिक मिड-डे मील परोसा जा रहा है, जिससे न केवल पैसे की बचत हो रही है बल्कि बच्चों का सुपोषण भी हो रहा है और इसीलिए जिला मौलिक शिक्षा अधिकारी सुधीर कालड़ा ने इन किचन गार्डन को विद्यालय पोषण वाटिका का नाम दिया है। रूपामाजरा स्कूल में जहाँ लगभग आधा एकड़ जगह में किचन गार्डन बना कर पत्तागोभी, बैंगन, घिया, कालीतोरी, प्याज और लहसुन का उत्पादन किया गया है, वहीं केसरी स्कूल में किचन गार्डन के लिए स्कूल के असुरक्षित कमरों की नीलामी के बाद उत्पन्न हुई खाली ज़मीन का प्रयोग कर शिमला मिर्च, हरी मिर्च, बैंगन, सफेद बैंगन, कद्दू और प्याज के साथ-साथ तरबूज भी उगाया जा रहा है। इन दोनों अध्यापकों को जिला मौलिक शिक्षा अधिकारी सुधीर कालड़ा द्वारा अपने कार्यालय में, उनके इस सराहनीय कार्य के लिए प्रशंसा-पत्र देकर सम्मानित किया गया।

जिला मौलिक शिक्षा अधिकारी ने कहा कि ये दोनों अध्यापक और विद्यालय इस मामले में अन्य विद्यालयों के लिए अनुकरणीय मिसाल बने हैं। जिले के अन्य विद्यालय मुखिया जिनके पास समुचित जगह उपलब्ध है, उन्हें भी इनसे प्रेरणा लेकर अपने-अपने विद्यालयों में पोषण-वाटिका विकसित करनी चाहिए। उन्होंने बताया कि जिले में इस कार्य को बढ़ावा देने के लिए खंड शिक्षा अधिकारियों से उन सभी स्कूलों की सूची माँगी गई थी जहाँ विद्यालय पोषण वाटिका बनाई जा सकती है। ऐसे सभी विद्यालयों से एक एक अध्यापक को कृषि विभाग के सहयोग से पोषण वाटिका विकसित करने बारे प्रशिक्षण दिलवाया जाएगा। और अब खंड शिक्षा अधिकारियों से इस संबंध में प्राप्त रिपोर्ट और अनुशंसा के आधार पर जिले के 120 स्कूलों को विद्यालय पोषण वाटिका विकसित करने के लिए 5000/- रुपये प्रति स्कूल की दर से राशि जारी कर दी गई है।

- शिक्षासारथी डेस्क

प्राथमिक स्तर पर बच्चों को मौखिक कहानी सुनाना

अलीमुद्दीन खान

बुनियादी साक्षरता और संख्या ज्ञान मिशन (FLN) के अंतर्गत शुरुआती कक्षाओं में बच्चों के भाषाई कौशल विकास के लिये विविध तरह की रोचक शिक्षण सामग्री और गतिविधियों का उपयोग किया जा रहा है। इन सामग्रियों के उपयोग और गतिविधियों के संचालन का एक स्वरूप और तरीका होता है और इन्हें उसी तरह से किये जाने पर ही ये प्रभावकारी और उद्देश्यपरक होती हैं। पिछले अंक में ऐसी कुछ गतिविधियों का ज़िक्र किया गया था। आज हम इस विषय पर चर्चा करेंगे कि प्राथमिक कक्षाओं के विद्यार्थियों को कहानी कैसे सुनायें।

कहानी सुनाना-

इसमें कोई दो राय नहीं है कि प्राथमिक स्तर पर बच्चों के भाषा विकास में कहानी सबसे महत्त्वपूर्ण विधा होती है। कहानी पर ढेरों तरह के काम किये जा सकते हैं और किये भी जाने चाहिए, जिससे भाषा के सभी आयामों का समान्तर विकास हो सके। यहाँ हम मौखिक कहानी सुनाने से संबंधित प्रमुख बातों को रेखांकित करने की कोशिश करते हैं।

कहानी विधा के शिक्षण में उपयोग को लेकर काफी काम किये गए हैं। इन समृद्ध अनुभवों का हमें लाभ लेना चाहिए, खासतौर प्रो. कृष्ण कुमार का काम इस मामले में गज़ब का रहा है। उन्होंने इस बारे में काफी कुछ लिखा भी है। उनका एक लेख/अनुभव कहानी सुनाने की जरूरत पर बहुत चर्चित रहा है, जिसे हम एक आधार नोट की तरह काम में ले सकते हैं और उसके आधार पर कहानी सुनाने की योजना बना सकते हैं। शुरुआती कक्षाओं में बच्चों को मौखिक कहानी सुनाने के काम को करने के लिए शिक्षक को निम्न बिन्दुओं पर स्पष्टता होना जरूरी है-

मौखिक कहानी सुनाने के हम क्या उद्देश्य मानते हैं? यहाँ हमारा उद्देश्य बच्चों का भाषा विकास, परिवेश का समावेशन और स्कूल को आनन्ददायी बनाने के इर्दगिर्द होना चाहिए, न कि कोई नैतिक शिक्षा या ज्ञान देने के लिए?

कहानी किस तरह की हों और कहाँ से आयें? इसके लिए प्रचलित लोक-कथाएँ, परिवेशीय कहानियाँ और पंचतंत्र अच्छा स्रोत हो सकते हैं।

शिक्षक का कहानी सुनाने का कौशल कैसा हो? यह प्रमुखतः बच्चों के स्तर से तय होता है। फिर भी कहानी सुनाते वक्त एक शिक्षक को निम्न बातें ध्यान रखनी चाहिए-

शिक्षक का कहानी पर पूरा नियंत्रण (अच्छे से याद) होना चाहिए।

कहानी को पूरे उतार-चढ़ाव और हाव-भाव के साथ सुनाएँ (हाव-भाव बच्चों के स्तर से तय होते हैं), पर अतिरिक्त नाटकीयता नहीं पनपे। शिक्षक द्वारा कहानी सुनाते वक्त बीच-बीच में बच्चों से अधिक सवाल नहीं पूछे जाएँ, इससे कहानी का रिदम टूटता है। कहानी सुनाते वक्त शिक्षक अपना कोई तकिया कलाम (आदतन कोई शब्द या वाक्य बार-बार दोहराना) इस्तेमाल न करें।

कहानी सुनाते वक्त शिक्षक की नज़र सभी बच्चों पर हो।

कहानी परिवेशीय भाषा में सुनाई जाये तो सबसे बेहतर होगा, पर मिली-जुली या मानक भाषा में भी कहानी सुनाई जा सकती हैं।

बैठक व्यवस्था गोलाकार (थोड़ा यू आकर लेते हुए) बेहतर रहती है। शिक्षक भी उसी गोले में नीचे बैठकर कहानी सुनाएँ। बड़ा गोला होने पर घूम-घूमकर भी सुनाई जा सकती है।

कहानी पर बातचीत दूसरा हिस्सा है जिसे समय को देखते हुए जोड़ा जा सकता है। कहानी पर बातचीत में निम्न बातें ध्यान में रखी जाएँ-

अधिकांश सवाल खुले हुए हों, जिनमें जबाव की रेंज अधिक हो, बच्चे अलग-अलग तरह के जबाव दे सकें। सूचना वाले बंद सवाल (कहानी याद रही या नहीं इसे जाँचने वाले) कम हों।

ऐसे सवाल अधिक हों, जिनमें बच्चे अपना मत बनायें, कल्पना करें, तुलना करें, विश्लेषण करें और अपने अनुभवों को शामिल करें।

शिक्षक बच्चों के जवाबों को गलत कह कर नकारें नहीं, बल्कि और जवाब देने को प्रेरित करें।

केवल होशियार और तेज माने जाने वाले बच्चों से ही सवाल न पूछकर सभी बच्चों से सवाल पूछे जाएँ।

शिक्षक मौखिक कहानी तब ही बेहतर ढंग से सुना सकता है, जब उसे कहानी अच्छी तरह से याद हो। इसके लिए एक प्राथमिक स्तर के भाषा शिक्षक को कम से कम तीस-चालीस कहानियाँ अच्छी तरह से याद हों। शिक्षक को नियमित कहानी की किताबें पढ़ते रहना चाहिए। इसके लिए हमारे स्कूलों में विविध तरह की पुस्तकें उपलब्ध हैं। इसके अलावा कहानी सुनाने के लिए पंचतंत्र और एकलव्य प्रकाशन की कहानियों का इस्तेमाल भी किया जा सकता है। शुरुआत इन चर्चित कहानियों- शेर और खरगोश, कौआ और मगरमच्छ, कछुआ और खरगोश, ऊँट और सियार, हाथी और चूहा, बिल्ली के बच्चे आदि से की जा सकती है।

स्टेट अकादमिक लीड (निपुण मिशन, हरियाणा)
लेंग्वेज एंड लर्निंग फाउंडेशन

लोकनृत्य में खूब रंग जमाते हैं स्पेशल टीचर कुलदीप कुमार शर्मा

सत्यवीर नाहड़िया

दिव्यांग बच्चों के लिए समावेशी शिक्षा के खंड स्तरीय संसाधन केंद्र, बावल में स्पेशल टीचर के तौर पर सेवारत बहुमुखी प्रतिभा के धनी कुलदीप कुमार शर्मा जब मंच पर लोकनृत्य की प्रस्तुति करने उतरते हैं, तो दर्शक मंत्रमुग्ध होकर उनके नृत्य को सुरीली तालियाँ देने पर विवश हो जाते हैं। शिक्षा विभाग के रंगोत्सव कार्यक्रम में वे रेवाड़ी जिले का प्रतिनिधित्व करने के अलावा अनेक मंचों पर अपनी कला का प्रदर्शन कर चुके हैं।

31 अगस्त, 1982 को पिता मुरारी लाल शर्मा तथा माता निर्मला शर्मा के घर राजस्थान के टोंक जिले के अंतर्गत रोद गाँव में जन्मे बालक कुलदीप को बचपन से ही सांस्कृतिक गतिविधियों से लगाव रहा। तीसरी कक्षा के छात्र के रूप में गणतंत्र दिवस पर नृत्य की प्रस्तुति देने के बाद उनका उत्साह आत्मविश्वास में बदल गया। फिर स्कूल तथा कॉलेज के छात्र जीवन में अनेक मंचों पर प्रस्तुति से अपनी प्रतिभा का परिचय दिया। जोधपुर स्थित जयनारायण विश्वविद्यालय में बतौर प्राध्यापक, अलवर के एक बीएड कॉलेज के कोऑर्डिनेटर होने के दौरान भी उनका यह शौक मंचों पर उन्हें विशिष्ट पहचान देता रहा। 3 मार्च, 2014 से बावल के उक्त केंद्र में स्पेशल टीचर के तौर पर सेवा के दौरान उन्होंने दिव्यांग बच्चों को सांस्कृतिक गतिविधियों हेतु प्रेरक मार्गदर्शन दिया। शिक्षा-विभाग द्वारा शिक्षकों हेतु प्रारंभ किए गए रंगोत्सव नामक प्रकल्प में उन्होंने लोक नृत्य श्रेणी में खंड तथा जिले के सर्वश्रेष्ठ लोक नर्तक का खिताब जीतकर राज्य स्तर पर रेवाड़ी जिले का प्रतिनिधित्व किया।

पिछले दिनों राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय बावल (बाल) में आयोजित छात्र संवाद कार्यक्रम में जहाँ जिला उपायुक्त ने उनकी इस लोक कला की मुक्त कंठ से प्रशंसा की, वहीं जिला स्तरीय शिक्षक दिवस समारोह में उन्होंने जिले भर से पधारे शिक्षकों का मन मोह लिया।

वे बताते हैं कि अलवर में जन्मांध कलाकार बनवारीलाल सेन के अलावा जाने-माने गायक डॉ. राजेश सोनी तथा संगीत प्राध्यापिका संजीता यादव ने उन्हें गायन वादन तथा नृत्य की बारीकियाँ समझाने में प्रेरक भूमिका निभाई। वे अपने केंद्र के सहयोगियों रामाधार

मीणा, राकेश टेलर, मुकेश मीणा तथा रवींद्र कुमार के साथ दिव्यांग बच्चों के सर्वे, दाखिले, मूल्यांकन, केस स्टडी, मेडिकल अंग, उपकरण दिलवाने, अध्ययन प्रक्रिया, सांस्कृतिक व खेलकूद कार्यक्रम, स्वास्थ्य जाँच, शैक्षणिक भ्रमण आदि के कार्यक्रमों के कुशल संपादन के साथ सांस्कृतिक गतिविधियों में बढ़-चढ़कर भाग लेते रहे हैं। केंद्र के खंड संसाधन प्रभारी प्राचार्य प्रदीप कुमार बताते हैं कि वे सांस्कृतिक गतिविधियों के अलावा विद्यालय तथा केंद्र की बहुआयामी रचनात्मक गतिविधियों को दिशा देने में भी सदा सक्रिय रहते हैं।

अपने छात्र जीवन में एनसीसी तथा एनएसएस के विद्यार्थी के अलावा फुटबॉल व तैराकी के खिलाड़ी रहे श्री शर्मा भजन गायन तथा ढोलक हारमोनियम वादन में भी विशेष रुचि लेते रहे हैं। अपनी माँ बोली तथा राजस्थानी माटी से अनन्य प्रेम करने वाले कला के इस अनूठे साधक ने अब तक अधिकांश लोक नृत्य राजस्थानी संस्कृति पर आधारित प्रस्तुत करके जड़ों के प्रति कलाकार के जुड़ाव-लगाव के ऊँचे आदर्शों को स्थापित किया है।

कुलदीप शर्मा बताते हैं कि वे गायन, वादन या नृत्य से केवल शौकिया जुड़े थे, किंतु दिव्यांग बच्चों को सिखाते-सिखाते निरंतर कुछ नया सीखते गए। अब उन्हें अगले वर्ष शिक्षा विभाग द्वारा आयोजित किए जाने वाले रंगोत्सव कार्यक्रम का बेसब्री से इंतजार है, ताकि वे लोक नृत्य में राज्य स्तर पर अपना सर्वश्रेष्ठ दे पायें।

प्राचार्य
राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय सीहा
रेवाड़ी, हरियाणा

समावेशी शिक्षण अभियान में एजुकेशनल पॉडकास्ट की उपयोगिता

नई शिक्षा नीति-2020 में स्कूली शिक्षा और उच्च शिक्षा के स्वरूप में रूपांतकारी बदलाव की पृष्ठभूमि तैयार की गई है, जिसमें समतामूलक एवं समावेशी शिक्षा एक विशेष चिंतनीय विषय बनकर उभरा है। शिक्षा में सभी की समान पहुँच, सहभागिता और अधिगम परिणाम में सामाजिक-अंतरालों को कम करने के लिए ही हर प्रकार की योजनाएँ और नीतियाँ प्रस्तावित की गयी हैं। नई शिक्षा नीति-2020 के अध्याय 6 एवं 14 में समावेशी शिक्षा के मुद्दे पर विस्तृत चर्चा की गयी है। सामाजिक-आर्थिक रूप से शिक्षा से वंचित समूहों को निम्न वर्गों में वर्गीकृत किया गया है-

1) लिंगाधारित
2) विविध सामाजिक एवं सांस्कृतिक पहचान
3) भौगोलिक पहचान- ग्रामीण-कस्बा और आकांक्षी क्षेत्रों के विद्यार्थियों की पहचान
4) विविध सामाजिक-आर्थिक स्थिति
5) विशेष आवश्यकता वाले (सीखने के संदर्भ में)

नई शिक्षा नीति का प्रमुख लक्ष्य ही यही है कि उपर्युक्त वर्णित पृष्ठभूमियों से संबंधित कोई भी बच्चा शिक्षा के अधिकार से वंचित न रह जाए। इसमें से भी दिव्यांग /विशेष आवश्यकता वाले बच्चों की समान भागीदारी सुनिश्चित करना प्रमुखता से शामिल किया गया है। उन्हें प्राथमिक से लेकर उच्चतर शिक्षा प्राप्ति के लिए सक्षम बनाने का लक्ष्य रखा गया है । राष्ट्रीय पाठ्यचर्या रूपरेखा तैयार करते समय एनसीईआरटी ने दिव्यांगजन के राष्ट्रीय संस्थानों से संपर्क भी स्थापित किया है। ऐसे में इन निर्धारित लक्ष्यों की प्राप्ति के लिए कक्षा में ऐसे विद्यार्थियों के सम्मुख खड़े अध्यापकों की चुनौतियाँ और जिम्मेदारी और अधिक बढ़ जाती है।

नई शिक्षा नीति-2020 में वर्णित विशेष आवश्यकता वाले बच्चों (विशेषकर दृष्टिबाधित और शारीरिक अक्षमता) के लिए समावेशी शिक्षा अभियान को गति देने में अन्य शिक्षण प्रविधियों में पॉडकास्टिंग की अहम भूमिका रहने वाली है, अर्थात् इन विशेष रूप से सक्षम बच्चों को ध्यान में रखकर ऑडियो (Audio) के माध्यम से अपनी कक्षा, प्रदेश, देश और विश्व स्तर पर अपनी शिक्षण सामग्री को प्रभावशाली ढंग से कैसे पहुँचा सकते हैं? निश्चित तौर पर यह यात्रा 'एक आंदोलन' का रूप ले सकती है।

हमारी आज की विषयगत चर्चा में हमारा परिचय 'एजुकेशनल पॉडकास्ट' नामक उभरती विधा से होगा और इसके साथ ही उन सभी महत्त्वपूर्ण ऑडियो प्लेटफॉर्म्स की जानकारी भी उपलब्ध हो सकेगी, जहाँ से हम अपने द्वारा नियोजित सामग्री को पॉडकास्ट के रूप में निःशुल्क रूप से तैयार और वितरित कर सकते हैं।

वस्तुतः यदि पौराणिक वैदिक परंपरा अथवा गुरुकुल की शिक्षण परंपरा पर विचार किया जाए तो स्पष्ट होता है कि हम पौराणिक काल से ही कंठ-परंपरा से सीखने-सिखाने वाले लोग रहे हैं। हमारी वैदिक-सूक्तियाँ, उपनिषद्, लोककथाएँ इत्यादि वाणी के माध्यम से ही एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी में स्थानांतरित हुई हैं।

शिक्षण में यह सुनने-सुनाने की प्रविधि पुरातन समय से हमारी विश्वास-जन्य प्रविधि रही है, क्योंकि शिक्षण में तो श्रुति-स्मृति का अटूट संबंध है, जिसे विलगाया नहीं जा सकता। शिक्षा के प्रथम चरण से लेकर उच्चतम चरण तक श्रवण की अपनी महती भूमिका रहती है।

शिक्षा के इस बदलते परिवेश में जब कक्षागत विविध चुनौतियाँ हमारे सामने खड़ी हों तो ऐसे में हमें भी कुछ मज़बूत नवाचार करने की अपेक्षा और आवश्यकता है। आप और मैं शिक्षक होने के नाते इस वास्तविकता को नकार नहीं सकते। यदि हम कहें कि हम इस दिशा में सीखने-सिखाने का यथासंभव प्रयास कर तो रहे हैं, और यदि सच में ऐसा है तो सीखने का अनुपात हमारे विद्यार्थियों में स्पष्ट रूप से दिख भी जाता है। जैसे हमारे प्रयास और युक्तियाँ होंगी, वैसा ही हमारे विद्यार्थियों के सीखने का स्तर होगा।

शिक्षा और समाज को समावेशी बनाने के लिए जो भी प्रयास किए जाने अपेक्षित हैं, उनमें नवाचार और तकनीक का सुनियोजित और संगठित रूप होना अत्यंत आवश्यक है। चूँकि नई शिक्षा नीति-2020 शिक्षा के समावेशी रूप की वकालत करती है ऐसे में भविष्य में शिक्षण हर तरह के भेदभाव से विमुक्त होना अनिवार्य है। हमें सबको पढ़ाना है, सबको मतलब सबको; हर तरह के भेदभाव से ऊपर उठकर और सभी तरह के तरीकों और संसाधनों से जोड़कर रखते हुए।

संभवतः 'समावेशी-शिक्षण में नवाचार' इस सदी और शिक्षा नीति- 2020 का सबसे महत्त्वपूर्ण उद्देश्य बनकर उभरे। ऐसा क्या नया किया जा सकता है?- खासतौर पर विशेष आवश्यकता वाले बच्चों के लिए, जिनकी दृष्टि बाधित है या शारीरिक अक्षमता है। विषय चाहे कोई भी हो, सभी में आज के उल्लेखित उप-विषय 'ऑडियो पॉडकास्ट' तकनीक का प्रयोग स्वतंत्र रूप से किया जा सकता है।

आखिर क्या है यह ऑडियो-माध्यम? रेडियो। जी हाँ! वही रेडियो जिसे हमारे पूर्वज किसी ज़माने में गीत-संगीत, किस्सागोई, कृषि की जानकारी और आकाशवाणी पर खबरें सुनने के लिए करते रहे हैं, लेकिन आज हम इस माध्यम का प्रयोग उन बच्चों को पढ़ाने के लिए कर सकते हैं, जो दृष्टि-बाधित होने के कारण ब्लैक-बोर्ड पर आपका लिखा हुआ देख नहीं सकते, आपके द्वारा लिखवाए-बनवाए नोट्स देख नहीं सकते, किन्तु हाँ! आपका कहा हुआ/समझाया हुआ, कहानी-कविता-गीत-निबंध के रूप में जो आपके द्वारा तैयार है /आपकी आवाज़ में है, आपके रेडियो चेनल पर सुन तो सकते हैं। इससे कम से कम इतना तो अवश्य सीख ही सकते हैं, जो उनकी सीखने और जानने की मूलभूत आवश्यकताओं को पूरा कर सके।

शिक्षक के रूप में हम सभी पढ़ाते समय अपनी मौखिक ध्वनियों/भाषा का प्रयोग तो करते हैं ही और अपने विषय के बारे में पूरी तरह से अवगत भी हैं। बस उसे कुछ नये तरीके से प्रस्तुत करने की आवश्यकता है और यह 'नया तरीका' आने वाले समय में उन सभी विशेष क्षमता वाले बच्चों को सिखाने के लिए पूरे देश और दुनिया के लिए 'एक आंदोलन' भी बन सकता है। इसे हम किस तरह से कर सकते हैं? उसी का क्रमानुसार परिचय आगे दिया जा रहा है-

हम सभी Spotify,Gana.com.,Apple.com, Jio Sawan,Google Podcast इत्यादि पॉडकास्ट Applications प्लेटफॉर्म के बारे जरूर जानते हैं, जिनका उपयोग हममें से अधिकतर शिक्षक साथी संगीत इत्यादि सुनने के लिए करते हैं। लेकिन आज हम यह जानने कि कोशिश करेंगे कि हमारा बनाया गया ऑडियो किस तरह से इन प्लेटफॉर्म्स पर पहुँचेगा? ताकि कोई भी- कहीं भी इंटरनेट के प्रयोग से उन्हें सुन सके। यहाँ यह बात विशेष रूप से उल्लेखनीय है कि ऑडियो सुनने के लिए वीडियो की अपेक्षा इंटरनेट डाटा कम खर्च होता है।

यू-ट्यूब पर सीधे ही अपने वीडियो अपलोड करते हैं, किंतु पॉडकास्टिंग के लिए हमें वितरक कंपनी/ डिस्ट्रीब्यूटर की जरूरत होती है । Anchor जोकि Spotify का ही एक हिस्सा है और दूसरा है Hubhopper । ये दोनों ही पॉडकास्ट रिकॉर्ड करने और वितरण करने के लिए फ्री प्लेटफॉर्म हैं। बस हमें इसका प्रयोग करना सीखना है जोकि अत्यंत आसान है, तो चलिए समझते हैं इसके आसान चरणों को-

प्रथम चरण (कैसे बनाएँ प्रोफाइल)

क.) 'एंकर' की website है - Anchor.fm और दूसरा है- Hubhopper.com

ख.) सबसे पहले इनमें से किसी एक को मोबाइल/ लैपटॉप/पीसी पर डाउनलोड कीजिए और अपना अकाउंट बना लें। केवल एक का प्रयोग करें, क्योंकि हमारे द्वारा तैयार पॉडकास्ट सिर्फ एक ही website से Spotify समेत सभी प्लेटफॉर्म पर वितरित हो जाएगा । हम यहाँ पर वेबसाइट का प्रयोग सीखेंगे ।

ग.) अकाउंट बना लेने के बाद आपके पास एक ई-मेल आएगी जिससे आपकी ई-मेल को वेरीफाई किया जाएगा। इसके बाद अब आपको 'एंकर' की वेबसाइट पर जाना है और सीधे हाथ की तरफ सेटिंग में जाएँ और अपने अकाउंट में लॉगिन करें।

घ.) अब अपडेट्स में जाकर अपने पॉडकास्ट का जो भी नाम आप रखना चाहें, वह रख लीजिए और विवरण भर दीजिए, जैसे किसी पुस्तक, रचना आदि का नाम और नीचे स्क्रॉल करते हुए आप पहुँचेंगे, जहाँ पर पॉडकास्ट तैयार करने वाले का नाम और तस्वीर लगा सकते हैं और इस सारी जानकारी को ऊपर दिए गए सेव बटन से सेव भी अवश्य कर दें। आपका प्रोफाइल तैयार हो चुका है ।

द्वितीय चरण (कैसे बनाएँ एपीसोड?)

क.) न्यू एपीसोड पर क्लिक करें, वहाँ आपको दो विकल्प मिलेंगे-

ख.) क्रिएट एपीसोड (यदि आप अभी रिकॉर्डिंग कर रहे हैं)

क्विक अपलोड (यदि पहले से की हुई रिकॉर्डिंग को ही अपलोड करना है)

ग.) अब एपीसोड का शीर्षक दीजिए और थोड़ा-बहुत विवरण जानकारी भरें ।

घ) एपीसोड नम्बर चाहें तो भर दीजिए। प्रोफाइल वाली तस्वीर दिखाई दे रही होगी, चाहें तो एपीसोड के अनुसार बदल दीजिए या वही रख लीजिए। आपका पहला एपीसोड अपलोड हो चुका है, अब पब्लिश का बटन दबाकर इसे पब्लिश कर दीजिए ।

तृतीय चरण-

यदि आप 'एंकर एप' पर ही अपना एपीसोड रिकॉर्ड करना चाहते हैं तो 'न्यू एपीसोड' के अंदर आप देखेंगे

-Record -Library -Message -Music -Transition

रिकॉर्डिंग के लिए यदि आप अलग माइक्रोफोन का प्रयोग कर रहे हैं तो उसे सेलेक्ट कर लीजिए अन्यथा सीधा रिकॉर्ड पर क्लिक करें और बोलना शुरू कीजिए और धारा-प्रवाह बोलते चलिए ।

रुकना चाहें तो 'स्टॉप' कर दें, शुरू करना हो तो फिर से 'स्टार्ट' कर दीजिए। आप चाहें तो कितनी बार भी रुक कर, विराम लेकर अपना एपीसोड रिकॉर्ड कर सकते हैं।

चतुर्थ चरण-

क.) आपके द्वारा रिकॉर्ड किये गए सभी एपीसोड्स लाइब्रेरी में जमा होते रहेंगे। साथ में दिए गए ब्राउज़र ऑप्शन से क्लिक करके आप फाइल ब्राउज भी कर सकते हैं और अलग-अलग ऑडियो का प्रयोग भी किसी एक एपिसोड में कर सकते हैं और ड्रैग करके उनका क्रम भी बदला जा सकता है।

ख.) इस पर आप कोई संगीत लगाना चाहें तो वो आपको बाईं ओर बार से मिल जाएगा। जैसा भी संगीत आपको उपयुक्त लगे उसे लगा दीजिए। अप्लाई करने से पहले प्री-व्यू जरूर सुन लें, जो उचित लगे वही लगाएँ।

पंचम चरण-

अब आपका एपीसोड तैयार है, इसे सेव कर लें। आपको पब्लिश का बटन दिखाई देगा। पहले वाला क्रम दोहराएँ और अपना एपीसोड पब्लिश कर दें ।

छठा चरण-

पब्लिश होने के बाद आपको डिस्ट्रीब्यूशन नाम का विकल्प दिखाई देगा। जहाँ से आप देखेंगे कि आपके एपिसोड का लिंक spotify पर अपने आप पहुँचा दिया गया है/शेयर कर दिया गया है।

सातवाँ चरण-

कोशिश करें कि यही spotify लिंक आप अपने सुनने वालों के पास भेजें, आप भी जब चाहें अपने टाइटल के साथ अपने एपीसोड को सर्च कर सकते हैं और आपके सुनने वाले भी ....

इसी प्रकार अपने एपिसोड बनाते जाएँ और नई शिक्षा नीति-2020 समावेशी 'शिक्षा सबके लिए' की अलख जगाते जाएँ।

https://podcasters.spotify.com/pod/dashboard/homeउदाहरण के लिए क्लिक कर देखें

डॉ. हरपाल ग्रोवर
प्रवक्ता हिन्दी
राकवमा विद्यालय
रतिया, जिला- फतेहाबाद,
हरियाणा

निरंतर उत्कृष्टता की ओर अग्रसर है डाइट हुसैनपुर

उच्च मापदंडों के प्रशिक्षण से कमाया नाम

सत्यवीर नाहड़िया

यदि कोई संस्थान एक सच्चे टीमवर्क के साथ पूरे समर्पण एवं अनुशासित प्रारूप में अपने दायित्वों का ईमानदारी से निर्वहन करे, तो गुणात्मक सुधार के साथ अपनी विशिष्ट मौलिक उपस्थिति दर्ज करवाने का सिलसिला निरंतर बरकरार रखेगा। रेवाड़ी जिले के गाँव हुसैनपुर स्थित जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान (डाइट) की बहुआयामी उपलब्धियों को देखते हुए यह बात पूरे विश्वास के साथ कही जा सकती है। इन दिनों डाइट में कम स्टाफ होने के बावजूद यहाँ चल रहे प्रशिक्षण कार्यक्रम की गुणवत्ता देखते ही बनती है, जिसमें कुशल नेतृत्व, संजीदा संयोजन तथा टीमवर्क के समर्पण को सहज ही महसूस किया जा सकता है। वर्ष 2004 से रेवाड़ी के राजकीय बॉयज स्कूल में प्रारंभ हुई यह डाइट वर्ष 2008 में अपने इस भवन में आई तथा तब से निरंतर उत्कृष्टता की ओर अग्रसर है।

इस शैक्षणिक सत्र में रोल प्ले व युवा संसद में राज्य स्तर व मंडल स्तर पर विजेता व उप विजेता देने वाले इस संस्थान ने विभिन्न प्रकार के प्रशिक्षण कार्यों में अपनी गुणवत्ता का राज्य स्तर पर लोहा मनवाया है, जिनमें योग, एनएसक्यूएफ, ई-कंटेंट, रेमेडियल, ई-अधिगम, साइबर-सेफ्टी, लैब स्किल, मॉडल मेकिंग, इंडक्शन एवं लीडरशिप, कैपेसिटी बिल्डिंग आदि प्रशिक्षण प्रकल्प उल्लेखनीय हैं। दस एकड़ के लंबे-चौड़े भूभाग पर फैले प्रशासनिक भवन के अलावा साथ लगते छात्रावास भवन तीन प्रशिक्षण कार्यक्रमों की मूलभूत जरूरतों में शामिल रहा है।

इतना ही नहीं, डाइट हुसैनपुर ने डिजिटल क्रांति के इस दौर में नवाचारी कदमताल भी किया है, जिसे इस डाइट के यूट्यूब चैनल, वेबसाइट, फेसबुक पेज के रचनात्मक कंटेंट तथा अलावा ई-मैगज़ीन (अरावली) की प्रेरक सामग्री व निरंतरता से सहज ही समझा जा सकता है। स्टेट करिकुलम फ्रेमवर्क में डाइट हुसैनपुर ने स्कूल एजुकेशन, टीचर एजुकेशन, अर्ली चाइल्ड केयर,

एनसीएफ तथा एससीएफ जैसे विषयों पर अपना उत्कृष्ट योगदान देकर अपनी विशिष्ट मौलिक पहचान बनाई है। इसके अलावा डाइट हुसैनपुर शिक्षा विभाग के कुछ विशिष्ट प्रकल्पों पर भी अपनी उत्कृष्ट सेवाएँ दे रही है।

बात चाहे एनएएस सर्वे की हो या फिर साइबर सेफ्टी जैसे विषय पर बिना किसी विभागीय फंड के सेल्फ डिजाइंड कंटेंट तैयार करने की नवाचारी पहल की हो, डाइट हुसैनपुर का काम बोलता है। बात चाहे बोर्ड परीक्षाओं के प्रारूप के अनुसार क्वेश्चन बैंक तैयार करवाने की हो, परीक्षा भय के दौरान मोटिवेशनल लेखन की हो, डाइट हुसैनपुर ने इन पहलुओं को अपनी वार्षिक परीक्षा में शामिल रखा है।

शिक्षाविदों तथा जिला शिक्षा विभाग का मानना है कि 10वीं तथा 12वीं की बोर्ड परीक्षाओं में रेवाड़ी का टॉप पायदान पर बने रहने की सफलता में डाइट हुसैनपुर की भी निर्णायक भूमिका रही है। जिले के शिक्षा अधिकारियों व डाइट प्राचार्य के बीच बेहतरीन तालमेल से यहाँ जिले के टीचर्स की जरूरतों के मुताबिक भी प्रशिक्षण व फील्ड मूल्यांकन कार्यक्रम चलाते चलाए जाते रहे हैं।

इसी डाइट से पिछले कुछ महीनों से एक खंड शिक्षा अधिकारी, एक खंड संसाधन समन्वयक तथा चार प्राचार्य पदोन्नत होकर चले जाने से अब यहाँ प्राचार्य के साथ एक वरिष्ठ प्राध्यापक तथा चार प्राध्यापकों की टीम ही बची है, किंतु इस परिस्थिति में भी डाइट में चल रहे रेवाड़ी तथा महेंद्रगढ़ के नव पदोन्नत स्कूल मुखियाओं की इंडक्शन एवं लीडरशिप प्रशिक्षण कार्यक्रम की गुणवत्ता से डाइट

हुसैनपुर के टीम लीडर की दूरदृष्टि के साथ टीचिंग तथा नॉन टीचिंग स्टाफ के टीम वर्क व समर्पण को समझा जा सकता है।

जिला शिक्षा अधिकारी नसीब सिंह बताते हैं कि वे डाइट में विभिन्न प्रशिक्षणों के दौरान पाते हैं कि इनमें निरंतर सुधार हो रहा है। जिला मौलिक शिक्षा अधिकारी वीरेंद्र सिंह नारा का कहना है कि एससीईआरटी तथा शिक्षा विभाग के विभिन्न प्रकल्पों में यह केंद्र अपने समर्पण एवं नवाचार के लिए निरंतर साधनारत है। कभी इसी डाइट में प्राचार्य के तौर पर सुपर-हंड्रेड की प्रारंभिक बैच का संरक्षण एवं संवर्धन करने वाली तत्कालीन डाइट प्राचार्या एवं सेवानिवृत्त संयुक्त निदेशक संगीता यादव आज भी यहाँ उनके साथ रही समर्पित टीम को याद करती हैं।

डाइट के 32वें प्राचार्य सुभाष चंद्र स्वीकार करते हैं कि अनेक चुनौतियों के बावजूद हम प्रशिक्षण के उच्च मापदंडों पर खरा उतरने का विनम्र प्रयास करते रहते हैं। वरिष्ठ प्राध्यापक डॉ. बीर सिंह इसे टीमवर्क का ही प्रतिफल बताते हैं। लंबे अरसे तक इसी डाइट में सेवारत रहकर जिले भर को प्रशिक्षण देने वाले अनिल यादव, गणितज्ञ डॉ. नरेश गुप्ता तथा जीव विज्ञानी दिनेश यादव प्राचार्य पदोन्नति के बाद आजकल यहीं प्रशिक्षण ले रहे हैं। उनके अनुसार प्रेरक मार्गदर्शन, विशेषज्ञता तथा नवाचारी पहल के चलते डाइट निरंतर निखरती रही है। इंडक्शन ट्रेनिंग में रिसोर्स पर्सन के तौर पर पधारे सेवानिवृत्त डीपीसी डॉक्टर राजेंद्र सिंह का मानना है कि इस डाइट में चार वर्षीय इंटीग्रेटेड कोर्स तथा नई शिक्षा नीति केंद्रित कुछ नयी प्रयोगशालाओं से इसे हिपा की सब एजेंसी के रूप में विकसित किया जा सकता है।

यहाँ सेवारत प्राध्यापिका डॉ. संगीता यादव, डॉ. नीरेन पाल, डॉ. रामफल, दीपक कुमार, धर्मेंद्र सिंह के विभिन्न प्रशिक्षण कार्यों में नॉन टीचिंग स्टाफ भी अपना निरंतर योगदान देता आ रहा है। खास पहलू यह है कि इस डाइट का सर्वश्रेष्ठ आना बाकी है।

प्राचार्य, राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय
सीहा, रेवाड़ी, हरियाणा

प्यारे बच्चो!

'बाल सारथी' आपका अपना पन्ना है। हम चाहते हैं कि इसमें आपकी रचनाओं को स्थान दिया जाए। आपने कोई मौलिक कविता, कहानी या अन्य विधा की रचना लिखी हो तो अपने अध्यापक की सहायता से हमें ई-मेल या डाक द्वारा भेजें। आपकी रचनाओं को प्रकाशित करके हमें प्रसन्नता मिलेगी।

'बाल सारथी' आपको कैसा लगा, जरूर लिखना। अगले अंक में ज्ञान-विज्ञान और मनोरंजन की सामग्री लेकर फिर आपसे मिलूँगी।

-आपकी यामिका दीदी

पहेलियाँ

1-इसे बुझा न पाए कोई,
आँधी आए या तूफ़ान।
इसे जला कर हाथ में थामो,
करे उजाला एक समान।

2- दान से ये घटती नहीं,
करिए जी भर दान।
छीन कोई सकता नहीं,
दिलवाती सम्मान।

3-दादा जी के बारह बेटे,
पोते हैं कुल साठ।
हर पोते के साठ हैं बेटे,
दादा जी के ठाठ।

4-इसके आने पर हम करते,
सोने की शुरुआत।
ये जाती तब ही मिलता है,
जग को धवल प्रभात।

5-जिसके आते हो जाते हैं
तन के कपड़े हल्के,
थोड़ा भी श्रम करो अगर तो
खूब पसीना छलके।

उत्तरमाला - 1-टॉर्च, 2-विद्या, 3-घड़ी, 4-रात, 5-गरमी

वसीम अहमद नगरामी
शिक्षक, आरएनजे विद्यालय नगराम
लखनऊ-226303

विज्ञान-प्रश्नोत्तरी

प्रश्न 1- भूकंप की शक्ति को मापने के लिए कौन-सा यंत्र उपयोग किया जाता है?
उत्तर- सिस्मोग्राफ
प्रश्न 2- किस उपकरण का उपयोग हवा की शक्ति तथा गति को मापने के लिए किया जाता है।
उत्तर- एनीमोमीटर
प्रश्न 3- तापमान को मापने के लिए कौन-सा यंत्र प्रयुक्त होता है?
उत्तर- थर्मामीटर
प्रश्न 4- किस उपकरण का प्रयोग ध्वनि की तीव्रता मापने के लिए किया जाता है ?
उत्तर- ऑडियोमीटर
प्रश्न 5- वाहन की गति को मापने के लिए कौन सा यंत्र प्रयुक्त होता है?
उत्तर- स्पीडोमीटर
प्रश्न 6- उड़ते हुए विमान की ऊँचाई मापने के लिए किस उपकरण का उपयोग किया जाता है?
उत्तर- अल्टीमीटर
प्रश्न 7- ऑक्सीजन मापने के लिए कौन-सा उपकरण प्रयुक्त होता है?
उत्तर- ऑक्सीमीटर
प्रश्न 8- प्रकाश की तीव्रता को मापने के लिए कौन सा उपकरण प्रयुक्त होता है?
उत्तर- फोटोमीटर

पार्थवी
कक्षा- 10+1
मुकंद लाल पब्लिक स्कूल, यमुनानगर, हरियाणा

चींटियों व मधु मक्खियों का संसार

चींटियाँ और मधुमक्खियाँ सभी मिलजुल कर कार्य करती हैं। सभी के कार्य बँटे हुए होते हैं। अंडे देना, साफ-सफाई करना भोजन एकत्रित करना आदि कार्य का विभाजन होता है। अंडे देने का कार्य रानी मधुमक्खी का है। मोम पैदा करना, साफ-सफाई करना, रस एकत्रित करना, छत्ता बनाना, फूलों की खोज करना, भोजन एकत्रित करना और रस से शहद बनाने आदि का कार्य श्रमिक मधुमक्खियों द्वारा किया जाता है। केवल मादा मधुमक्खी ही डंक मारती है।

चींटियों का संसार भी अलग है। कहा जाता है कि चींटी की प्रजाति संसार की सबसे छोटी प्रजाति है। अंडे देने का कार्य रानी चींटी करती है, जबकि बिल का ध्यान रखना, साफ-सफाई करना सिपाही चींटियों का कार्य होता है। चींटियों का रंग आम तौर पर लाल, भूरा, काला होता है। चींटियों के रहने के स्थान को कॉलोनी कहते हैं। मरने के बाद चींटियों के शरीर से ओलिक एसिड निकलने से अन्य चीटियों को यह जानकारी हो जाती है कि यह चींटी मर चुकी है और उसे छोड़कर आगे बढ़ जातीं हैं।

डॉ. कमलेन्द्र कुमार श्रीवास्तव
रावगंज, कालपी, जिला जालौन
उत्तरप्रदेश-285204

कबूतर का झूठ

एक जंगल में पक्षियों का एक बड़ा दल रहता था। रोज सुबह सभी पक्षी भोजन की तलाश में निकलते थे। पक्षियों के राजा ने अपने पक्षियों को कह रखा था कि जिसे भी भोजन दिखाई देगा, वह जाकर अपनी बाकी साथियों को आकर बता देगा और फिर सभी साथी एक साथ मिलकर खाना खाएँगे। इस तरह उस दल के सभी पक्षियों को भरपूर खाना मिल जाता था।

एक दिन भोजन की तलाश में एक कबूतर उड़ते-उड़ते काफी दूर निकल गया। उस रास्ते से गाड़ियों में अनाज के बोरे मंडी जाया करते थे। रास्ते में अनाज बिखर जाता। कबूतर गाड़ियों में अनाज के भरे बोरे देख कर बहुत खुश हुआ, क्योंकि उसे और कोई जगह तलाश करने की जरूरत नहीं थी। अनाज से भरी गाड़ियाँ वहाँ से रोज़ गुजरती थीं।

कबूतर के मन में लालच आ गया। उसने सोचा कि उस जगह के बारे में वह किसी को नहीं बताएगा और रोज उसी जगह आ कर पेट भर खाना खाया करेगा।

शाम को जब कबूतर अपने मित्रों के पास पहुँचा तब उससे साथियों ने देरी से आने का कारण पूछा। कबूतर ने एक झूठी कहानी सुना दी कि उस रास्ते पर तो बहुत से शिकारी बैठे हैं।

दल के बाकी कबूतर यह सुनकर डर गए और सभी ने निर्णय कर लिया कि वे उस रास्ते के आसपास नहीं जाएँगें।

इस तरह कबूतर का झूठ चलता रहा और वह कबूतर रोज़ उसी रास्ते पर जा कर पेट भर खाना खाता रहा। एक दिन कबूतर रोज़ की तरह रास्ते पर बैठकर खाना खा रहा था। खाना खाने में वह इतना मग्न था कि उसने उसकी तरफ आती हुई गाड़ी की आहट सुनाई नहीं दी। गाड़ी पास आ गयी और गाड़ी का पहिया कबूतर को कुचलता हुआ आगे निकल गया। इस तरह कबूतर को लालच के कारण अपनी जान गँवानी पड़ी।

शिक्षाः लालच बुरी बला है।

सीख लेंगे हम पढ़ते-पढ़ते

एक से दस तक गिनती गिनना
साथ में सीखना स्वरों का ज्ञान,
यहीं से फिर होगी शुरुआत
सिखाये हुए पर रखना ध्यान।

साथ चलेगी रंगों की दुनिया
पेड़-पौधों के चित्र बनेंगे,
बंदर, भालू, खरगोश, मछली
पहली बार में विचित्र बनेंगे।

जोड़ के कुछ सम भी सीखना
फिर घटा को हाथ है पाना,
भाग भी आ जाएगी प्यारे
गीत कोई बाल-सभा में गाना।

सुन्दर-सुन्दर सुलेख लिखेंगे
वर्णमाला जब आ जाएगी,
मुहावरों की भाषा भी जब
हम सबको पूरी आ जाएगी।

गुरुजन का आदर करना
सीख लेंगे हम पढ़ते-पढ़ते,
रोशन करेंगे नाम वतन का
रहेंगे सदा हम आगे बढ़ते।

लव कुमार
प्रवक्ता हिन्दी
रावमावि भूरेवाला
नारायणगढ़
जिला- अम्बाला
हरियाणा

प्यारी बिटिया

फूलों की फुलवारी बिटिया,
शुभ चंदन की क्यारी बिटिया।

गूँज उठेगा घर का आँगन,
सहज मधुर किलकारी बिटिया।

तुलसी के पौधे-सी पावन,
सब के मन की प्यारी बिटिया।

मिली चाँदनी जीवन-पथ में,
चाँद समान दुलारी बिटिया।

घुटनों के बल डोले घर में,
लगती राजकुमारी बिटिया।

सावन में बादल की रिमझिम,
ऋतु बसंत-सी न्यारी बिटिया।

बंदनवार सजे हर द्वारे,
कल्याणी शुभकारी बिटिया।

-गोविन्द भारद्वाज
प्रधानाचार्य
पितृकृपा 4/254,बी-ब्लॉक
हाउसिंग बोर्ड कॉलोनी,पंचशील,
अजमेर, राजस्थान

खेल-खेल में विज्ञान

दर्शन लाल बवेजा

आदरणीय अध्यापक साथियो व उत्साही विद्यार्थियो, इस अंक में प्रस्तुत हैं कुछ और शून्य व कम लागत से तैयार रुचिकर कक्षाकक्ष विज्ञान की गतिविधियाँ व विज्ञान खिलौने। बेहद खुशी की बात है कि इस अंक के साथ ही 'खेल-खेल में विज्ञान' शृंखला के अंतर्गत शून्य/कम लागत की पाठ्यक्रम आधारित व मनोरंजक 204 विज्ञान गतिविधियाँ प्रकाशित हो चुकी हैं।

1. जीवाश्म ईंधन कोयला कैसे बना ?

हर वर्ष विद्यार्थियों में कोयले के बारे में अजीब उत्सुकता होती है। बहुत से विद्यार्थी ऐसे मिल जाते हैं जिन्होंने कोयला पहली बार देखा होता है। एक ईंट भट्ठे से कोयला लाया गया। सभी विद्यार्थियों ने कोयले को हाथ में लेकर स्पर्श करके रंग, भार का अनुभव लिया व पानी मे डुबोकर देखा। उन्हें बताया गया कि कोयला एक जीवाश्म ईंधनीय अवस्था है जो पौधों और वनस्पतियों के अवशेषों से उच्च दबाव, तापमान और समय के प्रभाव से बना। इस प्रक्रिया को कार्बनीकरण कहा जाता है। कोयले को कोयले की खदानों से खोद कर निकाला जाता है। कोयले का प्रयोग इंसानी सभ्यता की विकास की समय-रेखा के साथ लगभग 2,000 से अधिक वर्षों से किया जा रहा है। कोयले की उपयोगिता को देखते हुए, इसे धीरे-धीरे ऊर्जा के मुख्य स्रोत के रूप में पहचाना जाने लगा। पिछली दो शताब्दियों से यह ईंधन का मुख्य स्रोत है। विद्यार्थियों को कोयले के बारे में रोचक तथ्य भी सुनाए गए। वे बोले- अच्छा जी, जो कोयले का टुकड़ा हमारे हाथ में है, वह करोड़ों वर्ष पहले कोई हरा-भरा वृक्ष हुआ करता था!

2. फुदकता-जोकर खिलौना बनाया

एक प्लास्टिक की बोतल, एक स्ट्रॉ, छोटा सा गत्ते का टुकड़ा, स्केच पेन, कैंची और गोंद इत्यादि का प्रयोग करके विद्यार्थियों ने खेलने के लिए एक साइंटिफिक खिलौना

बनाया, जिसे उन्होंने 'फुदकता जोकर' नाम दिया। गत्ते के टुकड़े के ऊपर एक जोकर का चित्र बनाकर, काट कर स्ट्रॉ के एक सिरे पर चिपका दिया। प्लास्टिक बोतल के ढक्कन में सुराख करके स्ट्रॉ का दूसरा सिरा बोतल के अंदर घुसा दिया। अब बोतल को दबाने-छोड़ने पर वह जोकर बाहर निकलता वापिस जाता है। प्रयुक्त बल से खिलौने को संचालित करके उन्होंने अपने सहपाठियों के साथ खूब खेला।

3. पेपर-कप व गेंद से बनाया खिलौना

चार इंच चौड़ी व छत्तीस इंच लंबी गत्ते की पट्टी को एक वर्ग के रूप में मोड़ लिया। उसकी चारों भुजाओं पर अंदर की तरफ एक-एक पेपर कप चिपका दिया। अब किसी एक पेपर कप में गेंद रखकर बने हुए खिलौने को घुमा कर गेंद को दूसरे-तीसरे-चौथे पेपर कप में डालनी है। इसकी गिनती करनी है और जो बिना गिराये गेंद को अधिक से अधिक बार गिलास में डालेगा वही जीतेगा। संतुलन व एकाग्रता से संबंधित यह वैज्ञानिक खिलौना विद्यार्थियों ने आगामी विज्ञान प्रतियोगिताओं के लिए तैयार किया।

4. ड्रम को बजाने पर चावल क्यों उछले ?

विद्यार्थियों ने मॉर्निंग असेंबली में बजाए जाने वाले ड्रम को हाथों से पकड़ कर उसके ऊपरी झिल्ली पर चावल के कुछ दाने रखें। एक अन्य विद्यार्थी ने नीचे बैठकर ड्रम हैमर से निचले सिरे को हिट किया। उन्होंने देखा कि ऊपरी सिरे पर रखे चावल के दाने उत्पन्न होने वाली ध्वनि के साथ-साथ उछलने लगे। कुछ विद्यार्थी जानना चाहते थे ऐसा क्यों हुआ?

चर्चा के दौरान विद्यार्थियों ने खुद ही हल निकाल कर कम्पन, ध्वनि, ऊर्जा स्थानांतरण, गुरुत्व बल व ठोसों में ध्वनि तरंगों के संचरण आदि को जिम्मेदार ठहराते हुए इस विज्ञान गतिविधि का आनन्द लिया।

5. स्टार्च के लिए आयोडीन टेस्ट करना

मंड (स्टार्च) की उपस्थिति का पता लगाने के लिए आयोडीन टेस्ट एक बहुत ही लोकप्रिय विज्ञान गतिविधि है, जिसे लगभग सभी विज्ञान अध्यापक अपने विद्यार्थियों को जरूर करके दिखाते हैं। किसी भी कार्बोहाइड्रेट युक्त खाद्य पदार्थ को पानी में उबाल लेते हैं। उसे छान कर प्राप्त विलयन को ठंडा करके, टेस्ट-ट्यूब लेकर जब उसके ऊपर 2-3 बूँदें आयोडीन विलयन की डाली जाती हैं तो गहरा नीला/काला रंग दिखता है जो आयोडीन टेस्ट कहलाता है। यह काला नीला रंग उस खाद्य पदार्थ में मंड (स्टार्च) की उपस्थिति का परिणाम देता है। कक्षा-6 की इस गतिविधि को कक्षा 7 व 8 के विद्यार्थियों ने भी अपने हाथ से करके देखा। चावल, गेंहूँ, आलू आदि में भी स्टार्च की उपस्थिति का परीक्षण किया।

अच्छा, तो आदरणीय अध्यापक साथियो व प्रिय विद्यार्थियो! आगामी अंक में फिर से मिलते हैं नई विज्ञान गतिविधियों के साथ...

साइंस मास्टर/ ईएसएचएम
राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय दामला
खंड-जगाधरी, यमुनानगर, हरियाणा

पहाड़ों के पहाड़- भाग 3

Fluency with Numbers Using Flexibility

पिछले अंक में हमने बच्चों के द्वारा प्रयोग में लाई जाने वाली रीजनिंग स्ट्रेटेजीज (तार्किक तरीकों) जैसे कि क्रमचयी गुणधर्म व "दोगुने का प्रयोग "का ज़िक्र किया था, जो कि गुणा के तथ्यों में प्रवाह लाने के लिए अत्यंत आवश्यक हैं। इस अंक में 9 के पहाड़े का प्रयोग एक रीजनिंग स्ट्रेटेजीज के रूप में करने के लिए, इसमें छिपे पैटर्न पर चर्चा करने के लिए कर रहे हैं –

9 के पहाड़े में गुणनफल तथ्य सबसे बड़े होने के बावजूद सीखने में सबसे आसान हैं क्योंकि 9 के पहाड़े में कई पैटर्न तथा तर्क (reasoning strategies) छुपे हैं।

*** सबसे पहले, 9 के गुणज को प्राप्त करने के लिए बच्चे आमतौर पर 10 के पहाड़े को प्रयोग में लाते हैं । उदाहरण के लिए मैंने एक बच्चे से पूछा कि 3 बार 9 कितना होगा? बच्चे ने 3×10 = 30 का प्रयोग करते हुए कहा," क्योंकि 3 × 10 = 30 है और 3 × 9 इससे सिर्फ 3 कम है इसलिए 30 – 3 = 27 होगा। यदि बच्चे इस प्रकार की तर्क रणनीति का प्रयोग करते हुए उत्तर देते है तो अवश्य ही उनकी नंबर sense का विकास हो रहा है।**

यदि आपको लगता है कि अभी बच्चे इस प्रकार की स्ट्रेटेजीज का प्रयोग नहीं कर रहे तो उन्हें ठोस वस्तुओं की मदद से इसे करने के मौके दिए जा सकते है। इंटरलॉकिंग cubes इसमें काफी मददगार हो सकती हैं अथवा किसी संदर्भ जैसे कि 10 थ्रीव्हीलर (ऑटो) के पहियों की संख्या 30 है तो 9 थ्रीव्हीलर के कितने पहिये होंगे, जैसे प्रश्नों को शामिल कर इस स्ट्रेटेजी पर बच्चों का ध्यान खीचा जा सकता है।

*** दूसरा, नौ के गुणा के तथ्यों में कुछ दिलचस्प पैटर्न शामिल हैं जो गुणन को खोजने की ओर ले जाते हैं। बच्चों को इसका पता लगाने और खोजने के लिए प्रोत्साहित करें।**

उदाहरण के लिए–

बच्चों से, प्रत्येक तथ्य को क्रम में रिकॉर्ड करके पैटर्न ढूँढने को कहें।

(9 × 1 = 9, 9 × 2 = 18, ..., 9 × 9 = 81)

×	0	1	2	3	4	5	6	7	8	9
0										0
1										9
2										18
3										27
4										36
5										45
6										54
8										72
9	0	9	18	27	36	45	54	63	72	81

बच्चे अनेक प्रकार के पैटर्न खोज सकते हैं जैसे –

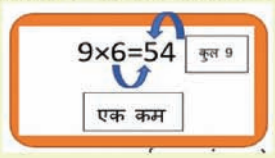

गुणनफल का दहाई का अंक हमेशा एक गुरंखंड (9 को छोड़ कर)से एक कम होता है। गुणनफल में दोनों अंकों का जोड़ हमेशा 9 रहता है। अतः गुणनफल ज्ञात करने के लिए इस पैटर्न का प्रयोग किया जा सकता है

9×8 के लिए गुणनफल होगा – 8 से एक कम – 7 जो कि दहाई का अंक होगा और 9 बनाने के लिए 7 में 2 जोड़ना होगा। इसलिए 9×8 = 72 हुआ।

*** पैटर्न के आधार पर, कुछ बच्चों ने उंगलियों का उपयोग करते हुए एक तरीका ढूँढा –**

दोनों हाथों को ऊपर उठाएं।

अपने बाएं हाथ की कनिष्का (लिटिल फिंगर) से गिनना शुरू करो, उदाहरण के लिए, 9 × 4 के लिए आप चौथी उंगली पर जाओ और इसे नीचे झुकाओ।

अपनी उंगलियों को देखें। आपके पास है–

मुड़ी हुई उंगली के बाईं ओर तीन 3 और दाहिनी ओर छः

तो हल आया = 36.

पैटर्न पर चर्चा करने के बाद, यह भी पता करना जरुरी है कि यह पैटर्न कैसे काम करता है क्योंकि वैचारिक संबंध को देखना आसान नहीं है। इसलिए बच्चों को यह सोचने के लिए चुनौती दें कि यह पैटर्न क्यों/ कैसे काम करता है।

यदि आप या आपके विद्यार्थी और नए पैटर्न खोजें या पता लगा पायें कि उपर दिए गए पैटर्न या उनके द्वारा खोजे गए पैटर्न क्यों काम कर रहे है तो हमारे साथ अवश्य सांझा करें।

अगले अंक में हम चर्चा करेंगे कि ज्ञात (पहले से ही मालूम) तथ्यों का प्रयोग करके किस प्रकार बच्चे नये (अज्ञात) तथ्य ज्ञात कर सकते है।

Take The Challenge- चुनौती

आइये कल्पना करें कि हम एक फर्श या आंगन क्षेत्र में टाइल लगा रहे हैं।
मान लीजिए क्षेत्रफल वर्गाकार है और माप 3 × 3 का है।
हमारे पास टाइलें तीन आकारों में हैं : 1 × 1 वाली, 2 × 2 वाली और 3×3 वाली।
जगह को पूरी तरह से ढकने के लिए, इन टाइलों की किसी भी व्यवस्था में रखा जा सकता है।
हालाँकि, किसी भी टाइल को काटा नहीं जा सकता है।

आपकी चुनौती के लिए, यह पता लगाइए – आपके द्वारा रखे गए टाइलों के तरीके से टाइलों की कुल संख्या कितनी बन रही है ?
उदाहरण के लिए, 3 × 3 वर्ग के लिए आप इसका उपयोग करके कर सकते हैं-

9 टाइल्स 1 × 1 माप वाली,

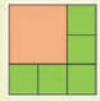

1 टाइल 2×2 माप वाली, और 5 टाइल्स 1×1 वाली,
या

1 टाइल 3 ×3 माप वाली।

टाइलों की सबसे छोटी संख्या एक है और सबसे बड़ी संख्या नौ है।

अब कल्पना कीजिए कि आपके पास ऐसी भी टाइलें हैं जो 4 ×4 माप वाली हैं। 4 × 4 वर्गाकार आँगन के लिए आप कितनी टाइलों का उपयोग कर सकते हैं? यदि आपके पास 5 × 5 माप वाली टाइलें भी हों , तो आप 5 × 5 वर्गाकार आंगन के लिए कितनी टाइलों का उपयोग कर सकते हैं?

इस चुनौती के अंतिम भाग में आप ने तीनों भाग 3 × 3, 4 ×4 और 5 ×5 में प्रत्येक के लिए मिले उत्तरों की सावधानीपूर्वक जांच करनी है।
अब आप जो देखते हैं, उसके बारे में अपने साथियों से चर्चा करें।
आप क्या सोचते हैं कि क्या होगा यदि कोई 6 × 6 और 7 × 7 वाले माप वाली टाइल्स का प्रयोग करना हो ?

प्रस्तावित(suggested) तरीका : बोर्ड या digital बोर्ड पर यह समस्या दिखाई जा सकती है। टास्क को समझाएं और बच्चों से कहें कि वे 3 × 3 वर्गाकार फर्श को कैसे टाइल कर सकते हैं ? वे मिनी-व्हाइटबोर्ड पर चित्र भी बना सकते हैं। अपने विचारों को बोर्ड पर साझा करें, जिससे छात्र पूरी तरह से संदर्भ से परिचित हो जाएं।

Note : इस challenge को क्यों करें?

यह समस्या विद्यार्थियों के लिए समस्या समाधान कौशल विकसित करने की एक अच्छी शुरुआत है। यह बच्चों को व्यवस्थित रूप से काम करने, पैटर्न ढूंढने, संदेह और निर्णय करने के लिए प्रोत्साहित करता है और क्षेत्रफल और इससे संबंधित ज्ञान को creativity के साथ प्रयोग करने के लिए प्रेरित करता है।

बच्चों को ध्यान दिलवाएं - कुछ टाइल की संख्या असंभव क्यों हैं, फिर उन्हें 6x6 और 7x7 के बारे में अनुमान लगाने पर ध्यान केंद्रित करने को कहें। छात्रों को सोचने और एक दूसरे से बातचीत करने के लिए समय दें, फिर पूर्ण चर्चा कक्षा में ले जाएं, बच्चों को अपने विचार रखने दें।

मुख्य प्रश्न- क्या आप हर बार एक अलग संख्या की टाइल ही ले रहे हैं ?
6x6 और 7x7 के लिए टाइलों की अधिकतम और न्यूनतम संख्या क्या होगी?
आप कैसे जानते हैं कि 3x3, 4x4 और 5x5 में क्या समान है? क्या आप इसे 6x6 और 7x7 पर लागू कर सकते हैं?

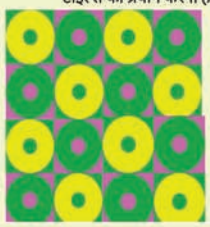

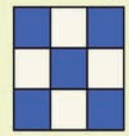

Ideating team-Mr. Sunil Bajaj, Dr. Jasneet Kaur SCERT, Haryana

2023
जुलाई माह
के त्यौहार व विशेष दिवस

1 जुलाई- राष्ट्रीय चिकित्सक दिवस

11 जुलाई- विश्व जनसंख्या दिवस

26 जुलाई- कारगिल विजय दिवस

28 जुलाई- विश्व हेपेटाइटिस दिवस

29 जुलाई- मुहर्रम

30 जुलाई- अंतरराष्ट्रीय मित्रता दिवस

31 जुलाई- शहीद ऊधम सिंह शहीदी दिवस

'शिक्षा सारथी' का यह अंक कैसा लगा? अपनी राय, विचार या सुझाव हमें अवश्य लिखें। लेखकों व शिक्षाविदों से अनुरोध है कि शिक्षा जगत् से जुड़े विषयों, योजनाओं, मुद्दों से संबंधित रचनाएँ व लेख हमें भेजें। अपने-अपने क्षेत्रों में होने वाली शिक्षा जगत की गतिविधियों की रिपोर्ट भी हमें भेजें। हमारा पता- शिक्षा सारथी, तृतीय तल, शिक्षा सदन, सैक्टर-5, पंचकूला।
मेल भेजने का पता-
shikshasaarthi@gmail.com

Let's come together to prevent drug abuse

Bandaru Dattatraya

The problem of drug abuse has assumed a critical proportion globally. This year's World Drug Day is appropriately themed on 'People First: Stop Stigma and Discrimination, Strengthen Prevention.' It is a grim reality that the victims of drug abuse suffer from familial and social isolation and repudiation. It causes a lot of mental and physical distress and trauma to them. They are also deprived of accessing the help they need. It makes their life and that of their families miserable and much tougher. Hence, there is a need for a people-centered approach to drug policies, which are focussed on human rights and compassion! Helping the victims of drug abuse with a social and emotional salve and at the same time putting an effective check on the growing tentacles of drug and illicit trafficking is indeed a gargantuan task but not an impossible proposition. It requires collective efforts and a wholesome approach to achieve the goal of freeing our country from drug abuse.

This year's World Drug Day is a call to "raise awareness about the negative impact of stigma and discrimination on people who use drugs and their families; raise awareness about the AIDS and hepatitis epidemics among people who use drugs and expand and strengthen HIV and hepatitis prevention programmes; promote evidence-based, voluntary services for all

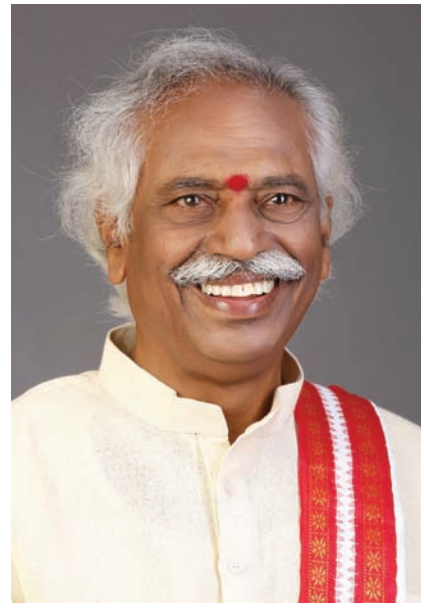

people who use drugs; educate about drug use disorders, available treatments and the importance of early intervention and support; advocate for alternatives to imprisonment for drug-related crimes such as community-based treatment and services; combat stigma and discrimination by promoting language and attitudes that are respectful and non-judgmental, and empower young people and communities to prevent drug use and addiction."

Quite often we read and hear about the children of well-off, elite and middle class families being caught for consuming banned substances at pubs. The process of licensing should be stricter and the de-licensing of such entities should be expedited. At the same time, I see an important role for society in checking the menace of drug abuse. Society should boycott drug suppliers and users. A social ecosystem should be evolved where the victims of drug abuse should be rehabilitated properly and those behind supplying drugs are socially boycotted. Parents should also be counselled on how to deal with their children and keep them away from the menace of drug abuse. Strong family values will be an asset for us in our fighting against drug abuse.

In the ancient Indian value system, there was a lot of emphasis on building the character of children. As a child, our teacher used to make us memorize that if health is lost, something is lost; if character is lost, everything is lost. Our forefathers were very particular about character building of their children. The concept gurukul was very much rooted in the idea of creating a value based society, which deals with social evils like drug abuse effectively. Home, school and place of worship are three key components of building a value-based social ecosystem. We need to give a serious thought to our ancient ways of addressing social challenges along with usual but tested means and mechanisms to prevent the spread of any evil, which eats into our vitals.

It is indeed gratifying to see a whole lot of things being done to tackle the challenge of drug abuse and rehabilitate the victims. There is, however, no scope to be complacent and miser in devoting necessary resources and attention to effectively deal with every aspect of the drug problem. There is a need

to further galvanize all stakeholders to protect our people from drug abuse and breaking the spine of illicit drug supply chains. The Narcotics Control Bureau should act strictly against drug suppliers. Equally important is better coordination between the agencies of Central and state governments including police forces in mounting an effective surveillance in vulnerable areas in particular bigger cities and bordering areas to check drug smuggling.

Given the magnitude of the problem of drug abuse, we need to work with a wholesome approach where every stakeholder has a role to play. As per the National Survey on Extent and Pattern of Substance Use in India conducted by the Ministry through AIIMS National Drug Dependence Treatment Centre (NDDTC), Ghaziabad, during 2018, the estimated number children and adolescents aged 10-17 years consuming alcohol, cannabis, opioids, sedatives, inhalants, cocaine, amphetamine type stimulants (ATS) and hallucinogens was pegged at 6.06 per cent, while 24.71 per cent adults aged between 18 and 75 were found to be indulging in drug abuse.

It is a matter of happiness that the Union Ministry of Social Justice & Empowerment is implementing a scheme of National Action Plan for Drug Demand Reduction (NAPDDR) under which financial assistance is provided to State Government and Union Territories Administration for preventive education and awareness generation, capacity building, skill development and vocational training and livelihood support for from drug addicts. During 2021-22, there were as many as 285559 beneficiaries under NAPDDR. Majority of beneficiaries were from Andhra Pradesh (15,295), Delhi (17,019), Haryana (6940), Himachal Pradesh (12,619), Madhya Pradesh (48,929), Punjab (9,555), Rajasthan (22,103), Telangana (6620),

Uttar Pradesh (16503) and West Bengal (7639).

Similarly, Nasha Mukt Bharat Abhiyaan (NMBA) was launched in August 2020 under which special emphasis is laid on the participation of stakeholders such as women, children, educational institutions, civil society organizations, etc., who may be directly or indirectly affected by substance use. Till now, through the various activities undertaken on-ground over 12 crore people have been reached out. Four thousand plus Yuva Mandals, Nehru Yuva Kendra (NYKs) and NSS volunteers, Youth Clubs have also been associated with the NMBA. The contribution of over 2.05 crore women have also been vital in reaching out to a larger community through Anganwadi Centres and ASHA workers, ANMs, Mahila Mandals and women SHGs. Over 1.19 lakh educational institutions have conducted activities with students and youth to educate them on substance use under NMBA across the country till now.

As a lot is being done to check the menace of drug abuse, we should have comprehensive digital content to create awareness among the people about the repercussions of drug abuse. We can also have related chapters in textbooks and films as well for cautioning the masses against falling into drug traps. The idea is to adopt a wholesome approach not only to check drug abuse but also to rehabilitate its victims. Instead of isolating them socially, we need to reach them with compassion and help so that they realize their mistakes and return to normal life. It is high time for us to rise to the occasion and end the menace of drug abuse for a healthy, wealthy and peaceful future!

(The writer is Governor of Haryana. The views expressed are strictly personal.)

Hon'ble Governor, Haryana

Beat Plastic Pollution

Babita Yadav

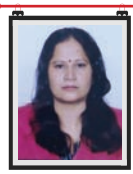

Environmental protection, ecological balance, water cycle and weather cycles have always remained subjects of prime concern from time immemorial. All the four Vedas propound that human beings must have friendly relations with the environment. But technological advancements, rapidly changing life styles and increasing population have adversely affected the season's cycles leading to climate change and pollution of air, water and soil. One of the major pollutants of the environment is plastic waste. From textiles and tyre dust to plastic bottles and packaging, use of plastic is manifold and so manifold are the hazards associated with its production, consumption and waste management.

Pollution caused by plastic has become one of the most alarming challenges posing a threat to the environment. Being cheaper and more durable, single use plastic has replaced the time-old traditional clayware. Production and consumption of plastic for various uses whether domestic or medical or automative, is increasing day by day. Plastics are produced from important natural resources like crude oil, gas or coal but forty percent of the total plastic produced is discarded after a single use. The popularity of online food delivery apps has worsened the situation and has led to an alarming increase in single use plastic waste. Plastic bags and food wrappers have utility and life span of minutes to hours only but they may remain in air, soil

and water for hundreds of years. Wind waves, sea and sunlight breakdown this plastic into small particles called microplastics. These microplastics are found in water and air affecting even the smallest creature. These disturb the food chain and the marine ecosystem. This microplastic enters the bodies of human beings as well as animals leading to serious health hazards.

India has taken several initiatives to curb plastic pollution. Plastic Waste Management Amendment Rules, 2022 bans the manufacture, stocking, distribution, sale, import and use of single use plastic items and holds the manufacturers of plastic products responsible for collecting and processing their products upon the end of the product's lifetime. India Plastics Pact brings stakeholders together to reduce, reuse and recycle plastics within the material's value chain. Khadi and Village Industries Commission launched the project REPLAN to reduce consumption of plastic bags and provide a better sustainable alternative. Honourable Environment minister launched Prakriti and other green initiatives for effective plastic waste management spreading awareness that small changes in life can curb plastic pollution. In 2022, 124 countries parties to the United Nations Environment Assembly including India signed a resolution

that all the signatories will address the full life of plastics from production to disposal, to end plastic pollution. Honourable Prime Minister, Mr. Narendra Modi, in the presence of UN Secretary General, Antonio Guterres launched Mission LiFE - Lifestyle for Environment, a new initiative for sustainable and healthy lifestyle at the Statue of Unity in Gujarat. This mission aims to fight against climate change with the help of individual and collective action. It aims to adopt India's environment-friendly lifestyle, culture and traditional practices where street and public food sellers serve food in plant- based biodegradable utensils of clay or sal tree leaves and tea in clay pots called kulhads instead of single use plastic containers.

Every citizen should contribute in proper implementation of policies made by the government to curb plastic pollution. Plastic items must be replaced with recyclable or biodegradable materials. Use of oxo-biodegradable plastics that are manufactured to be broken down by ultra-violet radiation and heat more quickly than plastics should be promoted. Plastic waste should be recycled using new techniques. Catering companies at work places should improve their food serving and food delivery habits, avoid the use of single use plastics and adopt environment-friendly serving and packaging material.

Curtailed use of plastic by every individual and effective management of plastic waste is the need of the hour. A global holistic action is required at national and international levels to save the environment from the dangers of plastic.

PGT English
GSSS Rewari, Haryana

Greed leads to Self Destruction

Dr. Himanshu Garg

'Karm karo, Phal ki Chinta mat kro' is the wisest message the Bhagwad Gita gives us. Today, we are so goal driven that we do everything only on thinking about the results. Even we don't know if our efforts are towards the right direction or not. Generally, we follow useless activities. Lust, anger and greed are the three gates leading to the hell of self destruction- defined by Lord Krishna in Bhagwad Gita. A person's efforts can raise himself or draw himself down, in the same manner.

I attended a Kitty Party last week. This party had gathering of about 20 people that sat in a row. There was an interesting and inspirational incident passed . A lady was trying to be clever there. She thought that nobody was looking at her activities but we noticed her from start to end. The waiter had started distributing snacks from the last and unfortunately, it didn't get to her sitting at the front. Another waiter started handing out cold drinks, from the front. But by then she had already moved to the last. So the drink didn't get to her. She was irritated and stood up to leave. But then she saw three ladies each with a big bowl of cheese chilli snacks. This time, She tried to be wise again by sitting at the middle. One of the waiter started the sharing from the front, and the second waiter started distributing from the last. When they got to the middle where she was seated, it got over again! Feeling frustrated, She bent her head. But then the third waiter passed there with a bowl. She became excited and snatched the bowl from his hands. Guess what was in the bowl? toothpicks !!!

At first, this incident made me laugh. After a moment, i thought deeply about the incident. Then I realized, it teaches us a most important lesson in life. Try to be simple. This life does not need so much astuteness everytime. Instead of concentrating on useless activities, focus on your work and try to give your best. If you are doing your best then good things will come to you automatically, sooner or later. Don't try to position yourself in life otherwise Your useless efforts will wrongly position yourself for the toothpicks only.

Asstt. Professor
Govt. College for Women, Jind
Haryana

All About Dipstick Studies

Ms. Rupam Jha

How to check the oil in a bottle or the level of any liquid in a bottle? It can be measured with a stick. This is the principal behind Dipstick Studies in research. A game called Lucky Dip works on the same principle. In lucky dip, the player immerses a fishing rod like stick and picks something. Here the luck factor is at play. A prize does come out but it may be a toffee or a chocolate.

Dipstick studies are very short studies with a quick survey. A onetime exercise to address a specific issue with limited questions. A market survey is when dipstick studies are done to know the mind of the consumer. Here specific questions are asked, as in all Dipstick Studies to get to the main point.

In perception based studies and to study the psychological impact of the target group, this study comes in handy. An easier method than carrying out a census survey. Market research finds this study very useful in knowing the attitude and beliefs of the target group about a certain product or idea.

Basically, a Dipstick Study is an exploratory research done to assess the scope of the study, the depth of the problem. In a tracking exercise, a frequent repetition occurs. In longitudinal studies the study is carried out repeatedly on the same target group

again and again over a long period of time.

There are organisations where, before a presentation a Dipstick Study is conducted with single digit stakeholders to authenticate and validate their point. It does not take long and makes the case being presented very strong.

This type of study is a qualitative study .In the education sector, it may be used as part of Formative Assessment. At this stage corrective measures and remedial actions may be taken to enhance learning levels. Timely intervention on the basis of this study will help the learner. Summative Assessment is full and final and no changes can be made after it.

In the classroom a dipstick study can be on the basis of any assessment, be it a written assignment or an orally administered test. The results of the previous test and current one can be compared to see if there is improvement, whether the interventions have worked. This is the principle behind Action Research.

The advantages are many. The biggest one being cost effectiveness and less time taken. Here because of the short duration of the study, the enumerator has the rapt attention of the respondent. At times just one method of data collection may be used. Only the interview method may be used with audio recording.

The advantages become their own disadvantages. The sample size is too small. Not enough documentation and may not be following the scientific

principles of research. But these very disadvantages become advantageous to those wanting to do a quick study.

This is an alternate form of research study and may be used in HR as well by the management. A means of communication with the employees. It enables better problem solving ability of the leadership team. Empathy also generates loyalty to the organisation.

Dipstick studies are like snapshots, at a glance. For pre- and post measurement it is used as a quicker and more cost effective method as compared to continuous tracking. Generally dipstick studies adopt open ended questions as part of their survey method so that people are free to speak their mind. Very often market surveys try to dip into the mind of the consumer and then this method of study is used.

There are times when a general vibe is to be had , here the feel becomes more important than statistical data. Then Dipstick Study becomes the best option. After the pandemic, one of the earliest studies to see its impact on livelihood was a dipstick study. Here too open ended questions were used to see the perception of the respondents.

The practitioner may use this method to assess the problem or situation. It is simple and effective and is being used not only in market surveys but also for educational surveys. So this method can be used not only for checking the level of liquid and as lab tests but also as a form of study.

This form of study will simplify the process of research and should be encouraged to be brought into practise on a larger scale.

A relatively new methodology in the education sector, training may be given to those wishing to adopt this method. The benefits of this method is immense, use it, advocate it, practise it, spread the word.

SCERT Haryana, Gurugram

The Gift of Love

A gift of love we give is a great pleasure,
A priceless treasure that we can't measure.
As it is a part of ourselves we give.
Give freely as there's only one life to live.

A gift of true love is so rare and dear,
So much to share and wipe every tear.
Yet we merely gift material things,
Hoping it would lasting joy bring.

The gift of love is like a power divine,
Bright like rays of golden sunshine.
Yet soft and mellow like old wine,
That only gets better with age and time.

The gift of love like a fragrant flower,
Indulges the senses now and forever.
Love transcends the Universe's boundaries,
Does'nt die with life's or seasons vagaries.

It is the only true gift to Earth we can give,
To the world and fellow beings who live.
So let's all embrace love's intangible essence,
Love all Earth's creatures, family and friends.

Dr. Deviyani Singh
deviyanisingh@gmail.com

Basic Rights of Women in India

Within the framework of a democratic polity, our laws, development policies, plans and programmes have aimed at womens advancement in different spheres. India has also ratified various international conventions and human rights instruments committing to secure equal rights of women. Key among them is the ratification of the Convention on Elimination of All Forms of Discrimination against Women (CEDAW) in 1993. In India, it is seen that women are not much aware of their rights and that continues to remain recessive in society. Only an aware person can well discern between just and unjust and this article would surely help you become just. Women do not need to be polite to someone who is making them feel uncomfortable. You know, what I mean right? Our Constitution provides exclusive rights to women for their protection and development. Fundamental Rights, among others, ensure equality before the law and equal protection of law; prohibits discrimination against any citizen on grounds of religion, race, caste, sex or place of birth, and guarantee equality of opportunity to all citizens in matters relating to employment. Articles 14, 15, 15(3), 16, 39(a), 39(b), 39(c) and 42 of the Constitution are of specific importance in this regard. Further more, IPC, Cr. PC and Evidence Act are also active when it comes to women and their protection. We have some special laws as well for effective implementation of the rights of women against abuse, Harassment, violence, inequality etc. against them such as the Protection of Women from Domestic violence Act, 2005; the Immoral Traffic (Prevention) Act, 1956; the Dowry Prohibition Act, 1961; the Indecent Representation of Women (Prohibition) Act, 1986; the Sexual Harassment of Women at Workplace (PREVENTION, PROHIBITION and REDRESSAL) Act, 2013; the Hindu Marriage Act, 1955 etc.

Most important rights are followings:-

1. Right to equal pay:-

We now have gender neutral laws. A male and a female is entitled to the same pay for the same work. The Equal Remuneration Act provides for

the same. It ensures payment of equal remuneration to both men and women workers for the same work or work of a similar nature. In the context of recruitment and service conditions, there will be no discrimination on the basis of gender.

2. Rights at workplace:-

You have a right to have a ladies toilet where you work. At places, with more than 30 female workers, providing facilities for care and feeding of children is mandatory. Further, the Supreme Court and the Govt. had put in to ensure the safety of women at workplaces. The Hon'ble Supreme Court in Vishakha v. State of Rajasthan, had laid down exclusive guidelines for protection of women from Sexual Harrasment at workplace, following which, the Govt. in 2013, has enacted an exclusive legislation- The Sexual Harassment of Women at Workplace (PREVENTION, PROHIBITION and REDRESSAL) Act, 2013 for that end. So if any person at your workplace, asks you for sexual favors, or makes sexually colored remarks and whistles looking at you or sings obscene songs looking at you, touches you inappropriately, or shows pornography, then all that will constitute Sexual Harrassment and you may complain to the Internal complaints committee which is required to be constituted by the employer at each office or branch with 10 or more employees. The District Officer is also required to constitute a Local Complaints Committee at each district, and if required at the block level. Apart from this, IPC also, penalizes Sexual Harassment under 354A by providing an imprisonment of 1-3 years.

3. Right to dignity and decency:-

Dignity and decency are women's personal jewels. Anybody who tries to snatch and disrobe her modesty is considered a sinner and law very well entails its punishment.

Every woman has the right to live in dignity, free of fear, coercion, violence and discrimination. Law very well respects women's dignity and modesty. The criminal law provides for the punishments for offences committed against women like Sexual Harassment (Sec. 354A), assault with intent to disrobe her (Sec. 354B) or to outrage her modesty (Sec. 354), Voyeurism (Sec. 354C), Stalking (354D) etc. In case the woman herself is accused of an offence and arrested, she is behaved with and dealt with decency. Her arrest and search should be made with strict regard to decency by a woman police officer and her Medical examination should be carried out by a woman medical officer or in supervision of a woman medical officer. In rape cases, so far as practicable, a woman police officer should register the

FIR. Furthermore, she cannot be arrested after sunset and before sunrise except for a special permission of the Magistrate by a woman police officer.

4. Right to maintenance:-

Maintenance includes the basic necessities of life like food, shelter, clothes, education, health care facilities etc. A married woman is entitled to get maintenance from her husband even after her divorce till she doesn't remarry. Maintenance depends on the standard of living of the wife and circumstances and income of the husband. Section 125 of the Code of Criminal Procedure, 1973, puts an obligation on the husband to maintain her divorced wife except when the wife lives in adultery or refuses to live with her husband without reasonable cause or when both of them live separately by mutual consent. Under the aforesaid section, any Indian woman irrespective of her caste and religion can claim maintenance from her husband. The Hindu Marriage Act, 1955 also facilities maintenance but to Hindu women only. Whereas, the Dissolution of Muslim Marriage Act, 1939 covers only Muslim woman

5. Right against domestic violence:-

Every woman is entitled to the right against Domestic Violence with her by virtue of the enactment of the Protection of Women from Domestic Violence Act in 2005. Domestic Violence includes within its ambit not only Physical abuse but also mental, sexual and economic abuse. So, if you are a daughter or a wife or a live-in partner and is subjected to any of such abuses by your partner or husband or his relatives or by person related to you by blood or adoption who live or have lived with you in a shared household, then you are well covered under the provisions of Domestic Violence Act and may seek different remedies provided thereof. You may contact the women helpline no. "1091" and register your complaint. They will inform the police about your case. You may also approach the women's cell of your area which you can find with the help of Google. They provide special services to such women and help them

lodge their cases before the Magistrate after drafting their complaints in a proper manner. You may also approach the police to register your case.

Since the case of Domestic violence is cognizable in nature, police is bound to register an FIR and investigate thereto, but in case, they refuse to do so then you may write a letter stating your case to Superintendent of police and post it, if SP feels that the information discloses a cognizable offence, then he may either himself investigate or direct his subordinate police officer to register the case and investigate it. In case, SP also refuses you may directly approach the Magistrate having jurisdiction in your area, and move your application under sec. 12 of DV Act with the help of a lawyer for seeking desired relief(s) against Domestic Violence which include protection, custody and compensation orders.The Indian Penal code also provides protection to such women who are subjected to Domestic violence, under Sec 498A by punishing the husband or his relatives with the imprisonment which may extend to 3 years and fine.

6. Right against dowry:-

Dowry system i.e. giving and taking of dowry by bride or bridegroom or by their parents at, before or after the marriage is penalized by Dowry Prohibition Act, 1961. The Act, defines "Dowry" as any property or valuable security given or agreed to be given either directly or indirectly by one party to the other but does not include dower or mahr in the case of persons to whom the Muslim Personal Law (Shariat) applies. If you give, take or abet giving or taking of dowry, then you shall be punishable with a minimum imprisonment of 5 years and minimum fine of Rs. 15,000."Say no to dowry, it breeds violence."

7. Right to free legal aid:-

If you are an aggrieved woman, you are entitled to claim free legal services

from the legal services authorities recognized under the Legal Services Authorities Act, 1987 irrespective of whether you can afford legal services on your own. There are District, State, and National legal Services Authorities constituted at District, State and National level respectively. Legal services include assisting in the conduct of any case or other legal proceedings before any Court or tribunal or authority and advising on legal matters.

8. Right of private defence/ self-defence:-

It is a defensive right. You can cause hurt, grievous hurt or even death in protecting your body or another person's body from the assailant. But you can kill the assailant without attracting liability and punishment only in certain circumstances like:When you feel that the assailant is about to cause your death or grievous hurt or commit rape, kidnapping or abduction or if he intends to lock you in a room or throws or attempts to throw acid at you, then you can kill that person and law will protect you.

Indian Law protects women very well. These most common yet basic Rights of women should be known by every Indian woman. A person who knows law, doesn't need any weapon. Law itself is his weapon which makes him the most powerful person. Awareness about your rights makes you smart and just. Only if you are aware of your rights, can you fight against any injustice meted out to you at home, at the workplace, or in the society Laws focusing on the needs of women is a much-needed exercise and Codified laws could further help to protect them from the arbitrary action of institutions, individuals, or the state. While the same is under process, awareness is the key for a women to protect her rights and I hope that this information will help to give an insight into some of their basic rights". So, dear ladies,:"Don't be oppressed, know your rights and claim them because when one woman stands up for herself, she stands up for all the women."

Anju Soni
Legal Assistant
SCERT Haryana, Gurugram

SATSQ

Dr. Deviyani Singh

Now you might wonder what is this new abbreviation?

It's snappy answers to stupid questions created by Al Jaffee of Mad Magazine of which I have been a big fan. I've always marveled at people who can do this. I just get dumbfounded at some rude or weird questions, it takes me some time to recover and make a comeback.

The weirdest was from a Haryanvi relative on a visit to my village when I was at the sensitive age of 12 years. I am short or shall I say vertically challenged and as a consequence also look young for my age.

The uncle 'Tau ji ' asked me,

"Bete chotey ho ki chotey reh gye ho?" (Are you small or are you short?)

I could not answer for some time and just glared into his two dark beady eyes staring at me, a smile mocking at their corners from a head which seemed much too small for his 6'4 foot frame.

I answered finally,

"Uncle, when God was distributing height, I was a bit behind in the line."

"Oh really why is that?" he bellowed, a raucous long hyena like laugh.

"I got delayed, as I was first in the line for brains, while you I noticed were quite behind."

He choked and swallowed hard, his huge Adam's apple bobbed up and down a few times. There was an awkward silence. He huffed and stomped off.

I was not taken to that village house again after that.

On the local bus on the way home I realised Haryanvis had another peculiar quality. They would not answer direct questions, or rather answer questions with more questions.

A passenger hollered to the bus conductor, "Hey where is this bus headed?"

The conductor replies, "Where do you want to go?"

Passenger answers, "Thari gail chalunga" (I will follow you, where ever you are going.)

A simple word - Delhi, would have avoided these dialogues, or he could have just pointed out to where the route was written on the headboard but no, I think they have made an art of SATSQ. They have fun answering this way. Maybe a competition of dumb and dumber or smart and smarter who knows?

Once we were posted at a very remote area in Haryana called Kosli. Even the district administration was

not sure under which area it fell. In the entire tenure I received a single phone call on the land line,

"Hello Madam ji, ye kaunse district mein padta hai?"

I answered, "Aren't you supposed to know, why are you asking me this?"

He replied weakly. "Must be somewhere in Rewari then..." a click and silence. The stridulation of crickets was louder than the phone bell here.

Next morning I sent my helper out to get some coffee and he returns with a register. He said he asked around and they sent him to a school stationary shop saying they heard 'kapi'/copy. I dont know if they do this on purpose or they just like playing around. I think like I said before their sense of humour centres around giving weird answers.

Next I asked my helper to get bread for breakfast and he just grinned showing perfect white teeth,

"Madam ji, you can have it for lunch not breakfast."

"Oh why is that?"

"Because the only daily fresh supply of bread comes on the train which reaches here at 11am." He gave a silly condescending smile.

I decided to stop asking questions, fearful of their answers. Even my Haryanvi husband mocked my questions with his answers.

Every time I asked what is a normal question for most ladies, "Do I look fat in this dress?"

"Im not supposed to tell you this!" he winked.

But in the evening I got my revenge to my oversmart helpers answers.

It was such a remote place that when the power was cut at night it was pitch black for miles around. I sighed and went outside to the huge compound, asked for a chair and sat down.

The night was a bit chilly as the sandy soil loses heat fast in the night. I closed my eyes and laid my head back but when I opened them I was mesmerized. I had never seen so many stars in my life. Sparkling like diamonds all around, right down to the horizon on the inky black blanket of the night sky.

My two helpers came out too. The silence of the still night was broken by an aeroplane flying past, way up high, its tail lights flashing.

Helper 1 asked, "How come the planes don't bang into so many stars?"

Helper 2 - "Arey bawle, the pilot can see out of the cockpit, so if a star comes in front he steers the plane away."

I chuckled away in the darkness. Their answers were priceless.

deviyanisingh@gmail.com

Career guidance for 12th-grade students

Career guidance for students of 12th class in India to help them make informed career choices. Here are some steps that may be helpful:

- Self-Assessment: The first step is to do a self-assessment of your interests, skills, and personality. Identify your strengths and weaknesses and assess your career goals.
- Explore Career Options: Once you have assessed your strengths and weaknesses, start exploring various career options. Consider the fields that interest you the most and research their requirements, job prospects, and salary potential.
- Consult with Career Counselors: It is always helpful to consult with career counselors, who can provide you with expert advice on different career paths, job markets, and education requirements.
- Attend Career Fairs: Attend career fairs and job expos in your area to learn more about different industries, meet industry professionals, and discover new career opportunities.
- Take Professional Aptitude Tests: Professional aptitude tests, such as the Myers-Briggs Type Indicator or the Strong Interest Inventory, can help you identify your skills and interests, and suggest career paths that align with your personality type.
- Consider Higher Education: Consider pursuing higher education, such as a Bachelor's or Master's degree, in a field that interests you. This can help you acquire the knowledge and skills needed to succeed in your career.
- Get Work Experience: Consider internships or part-time jobs in industries that interest you.

This will help you gain work experience, make industry connections, and gain valuable insights into the job market.

Remember, choosing a career is a big decision, and it's important to take the time to explore your options and make an informed decision. Good luck!

Ode to Sun Worshippers

Oh fiery amber orb of molten gold,
Attracting planets since time beyond.
Giver of life and warmth on Earth,
Burning bright our galaxies hearth.

And when thou does depart for the night,
Filling blank pages of the sky with stars bright.
The moon too glows with your reflected light,
For none in this universe shines as bright.

We worshiped thee since days of yore,
Thy name revered in many a folk lore.
Thy gleaming threads woven in ancient tales,
Chanting hymns in sacred tongues do enthrall.

The Egyptians revered the Sun God Ra,
As so did the ancient Incas and Mayas,
Greeks revered Helios; Sol, the myth of Norse,
Every culture worshipped thy life giving force.

In India we worship thee during Chhath Puja,
Aztec sun gods Huitzilopochtli and Tezcatlipoca,
Even demanded many a human sacrifice cruel.
The Sun is a part of every civilizations rituals.

The incarnation of the sun god, Inti ruled Peru.
In Japan they prayed to sun goddess, Amaterasu.
We worship thy spectacular dance, a celestial waltz,
Our souls renewed and our sun blessed spirits exalt.

Dr. Deviyani Singh
deviyanisingh@gmail.com

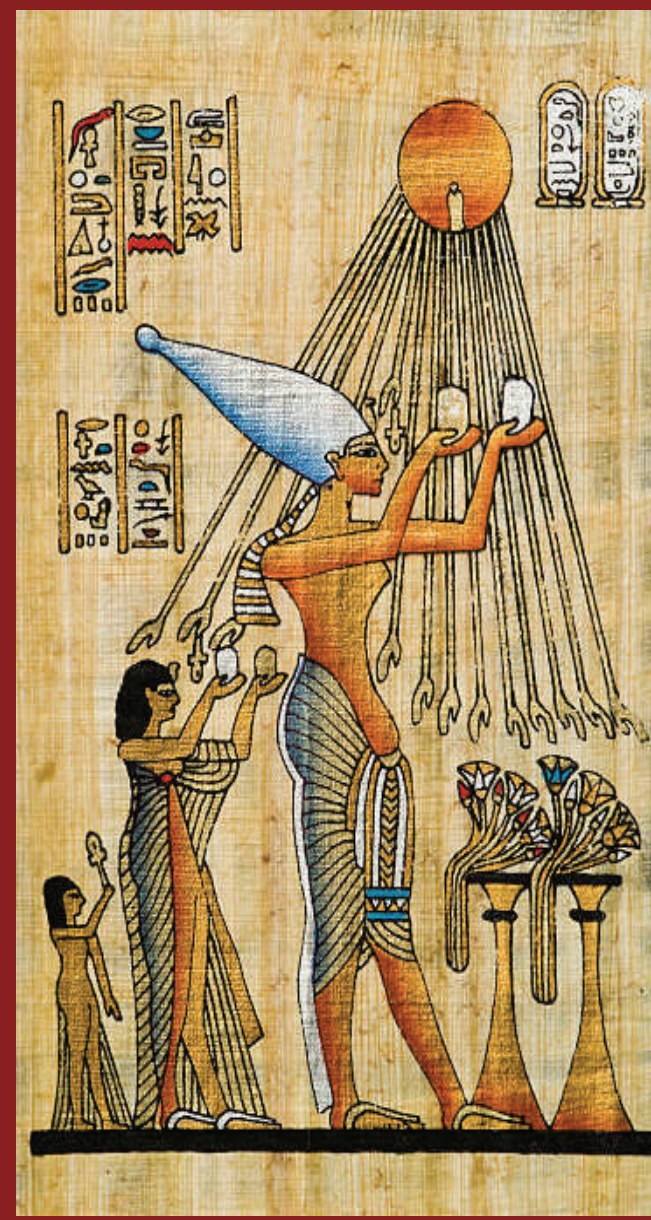

Amazing Facts

1. **The first lighthouse was in Alexandria in 290 B.C.**
2. Heinz first started making ketchup in 1876 and the recipe has remained the same ever since.
3. The most popular name for a pet in the United States is Max.
4. Spiral staircases in medieval castles are running clockwise. This is because all knights used to be right-handed. When the intruding army would climb the stairs, they would not be able to use their right hand which was holding the sword because of the difficulties of climbing the stairs. Left-handed knights would have had no troubles, except left-handed people could never become knights because it was assumed that they were descendants of the devil.
5. The CN Tower located in Toronto; Ontario Canada took a total construction time of 40 months to complete at an original cost of $63 million.
6. The 20th president of the United States, James Garfield, was able to write Greek with one hand and Latin with the other at the same time.
7. The country of Andorra has a zero percent unemployment rate.
8. In Los Angeles, there are fewer people than there are automobiles.
9. A woman has approximately 4.5 litres of blood in her body, while men have 5.6 litres.
10. The oldest known disease in the world is leprosy.
11. A fall of 30 feet can be survived my most cats.
12. The largest member of the dolphin family are orcas.
13. In 1477, the first diamond engagement ring was given to Mary of Burgundy by Archduke Maximillian of Austria.
14. TWIX Caramel Cookie Bars were first introduced in 1979.
15. Nintendo was first established in 1889 and they started out making special playing cards.
16. People over the age of fifty will start to lose their dislike for foods that taste bitter.
17. Elephants have been known to learn up to 60 commands.
18. Copper is the second most used metal in the world.
19. Milton Bradley originally wanted to name the game Twister, Pretzel; but he could not since the name was copyrighted.
20. According to studies, men prefer to have white bedrooms and women prefer to have blue bedrooms.
21. If someone was to fly once around the surface of the moon, it would be equal to a round trip from New York to London.
22. The tallest woman that ever lived was Zeng Jinlian who was 8 feet 2 inches tall of China. She died at the age of 17.
23. An adult "Gold Frog" measures to be 9.8 millimeters in body length.
24. Each day, anywhere from 35-150 species of life go extinct.
25. Alexander Graham Bell, the inventor of the telephone, never telephoned his wife or mother because they were both deaf.
26. Alexander the Great made his troops eat onions as he believed it would prove their vitality.
27. Central air conditioners use 98% more energy than ceiling fans.
28. The king of hearts is the only king without a mustache.
29. Men can read smaller print than women; women can hear better.
30. Every day, U.S. business use enough paper to circle the Earth over 20 times.
31. The Welwitschia plant can live up to 1,000 years.
32. The dromedary camel can drink as much as 100 litres of water in just 10 minutes.

https://greatfacts.com/

1. What mobile entertainment takes its name from the ancient Roman rounded arenas ? **Circus**
2. What word makes six other words when prefixed with: Cut, Ice, End, Beat, Hand, and Side ? **Off**
3. What whole two-digit number is the square root of 9801? **99**
4. Which of these is not generally considered a 'superfood': Kale; Almonds; Avocado; Goji berries; or Butter? **Butter**
5. What metallic element has the highest electrical and thermal conductivity, and reflectivity: Gold; Silver; Copper; or Lead? **Silver**
6. In 2015 which two of these nations opened a railway link for the first time in over 100 years, between Brownsville and Metamoros? USA; Russia; Mexico; Canada; or Greenland? **USA and Mexico**
7. What word refers to an isometric core exercise and traditionally the process of surfacing a wooden ship's deck? **Plank**
8. What multi-award-winning 1990s US children's animated alliterative TV series featured todders called Angelica, Tommy, Chuckle, Lil, and Phil? **Rugrats**
9. The Yiddish word/concept 'mensch', anciently derived via German from Roman philosopher Cicero's work Humanitas on human civilisation, refers to a person of great: Wit; Integrity; Cunning; or Incompetence? **Integrity**
10. Combs/honeycombs, whiskers, stacks, and train tracks refer to patterns in: Ice cream; Cement/concrete; Wheatfields; or Faded denim jeans? **Faded denim jeans**
11. Spell the country, The: Phillippines; Philippines; Phillipines; or Philipines? **Philippines**
12. British Queen Victoria (1819-1901) is what relation to Queen Elizabeth II: Great Grandmother; Great Great Grandmother; Great Great Great Grandmother; or Great Step-Aunt? **Great Great Grandmother**
13. What completely non-infectious neurodegenerative disease was misreported as being 'infectious' by most mainstream UK news media in September 2015? **Alzheimer's**
14. Boron, silicon, germanium, arsenic, antimony and tellurium are commonly considered the six primary chemical element: Metals; Metalloids; Gases; or Plasmas? **Metalloids**
15. Coccinellidae, whose common name variants suggest a female form, are: Fish; Beetles; Birds; or Reptiles? **Beetles**
16. What 1960s-launched children's toy has friends Paul, Patch Vicki and Mitzi? **Sindy**
17. In modern times a 'life celebrant' typically officiates at a humanist: Marriage; Birth; Funeral; or Divorce? **Funeral**
18. Commonly abbreviated to MON and RON, what does the O stand for in engine and fuel performance rating? **Octane**
19. Deriving from 'Tagalog' Austronesian language 'bundok' (mountain) the US-English word 'boondocks' (and 'boonies') refers disrespectfully to: Sheep; Crows; A remote rural area; or Leather trousers? **A remote rural area**
20. Rocna, Spade, Bulwagga, Grapnel and Admiralty/Fisherman are varieties of: Telescope; Anchor; Rudder; or Galley kitchens? **Anchor**

https://www.businessballs.com/quiz/quiz-375-general-knowledge/

आदरणीय संपादक महोदय,

सादर नमस्कार।

'शिक्षा सारथी' का मई-जून का अंक पढ़ने को मिला। मुखपृष्ठ पढ़ते ही 'निपुण हरियाणा मिशन' के बारे में जरूरी जानकारी अर्जित करने के लिए मन उत्साहित हो उठा। एक ओर जहाँ अक्षय कुमार निखिल ने अपने आलेख, 'निपुणता की ओर बढ़ते कदम' में निपुण भारत मिशन के बारे में विस्तृत जानकारी दी है, तो दूसरी ओर पवन कुमार का आलेख, 'एफएलएन ने बदला शैक्षिक वातावरण' इस कार्यक्रम की सफलता पर बल देता है। जिला कुरुक्षेत्र, चरखी दादरी, जींद, रेवाड़ी, झज्जर, करनाल, हिसार आदि के एफएलएन समन्वयकों ने अपने-अपने जिलों में चल रहे निपुण हरियाणा मिशन के बारे में विस्तृत जानकारी साँझा की, जो कि हरियाणा के प्रत्येक अध्यापक के लिए प्रेरणास्रोत है। शिक्षा-सारथी के डेस्क से, 'तंगौर गाँव के राजकीय स्कूल में लगी मनोहर पाठशाला' को पढ़कर पता चलता है कि किस प्रकार से हमारे राज्य के मुख्यमंत्री भी शिक्षा के प्रति संवेदनशील हैं। अलीमुद्दीन खान ने बताया कि किस प्रकार से कक्षा का प्रिंट-रिच वातावरण बच्चों के भाषा विकास, सृजनशीलता और विद्यालय में उनकी नियमितता और ठहराव में इज़ाफा करता है। प्राथमिक अध्यापिका कविता की कविता कक्षा के प्रिंट-रिच वातावरण पर बल देती है। हर बार की तरह डॉ. ओम प्रकाश कादयान का आलेख, 'समाज का यथार्थ चित्रण है, भट्ट के चित्रों में' एक छुपे हुए कलाकार की कला को एक अद्भुत संबल देता है और नवीन कलाकारों को जन्म देता है। दिनेश प्रताप जी का आलेख, 'छाँटना होगा बाल मन का कुहासा' वास्तव में आज के भाग-दौड़ भरे कृत्रिम सामाजिक परिवेश को सोचने को मज़बूर करता है। हर बार की तरह 'बाल-सारथी' की सारी सामग्री मज़ेदार थी। दर्शन लाल बवेजा का 'खेल-खेल में विज्ञान' एक नवीन जानकारी लेकर आया। ज्योति अरोड़ा जी का आलेख भी इनोवेटिव पैडागॉजी के जरिये बच्चों का ज्ञानवर्धन करता है। कुल मिलाकर 'शिक्षा सारथी' का यह अंक नवीन और अद्भुत जानकारी से ओतप्रोत था। वास्तव में संपूर्ण संपादन मंडल बधाई का पात्र है।

नीलम देवी, संस्कृत प्रवक्ता
रावमावि गिगनाऊ
खंड-लोहारु, जिला- भिवानी, हरियाणा

आदरणीय संपादक महोदय!

सप्रेम नमस्कार।

'शिक्षा सारथी' पत्रिका का पिछले माह का अंक पढ़ने का सौभाग्य मिला। 'निपुण हरियाणा' पर केंद्रित इस अंक से पता चला कि प्रदेश में इस कार्यक्रम को कितने अच्छे ढंग से चलाया जा रहा है। बच्चे रुचिपूर्ण ढंग से सीख रहे हैं। कई ज़िलों की महत्त्वपूर्ण पहलों को पत्रिका में स्थान दिया गया है। निश्चित तौर पर इससे न केवल श्रेष्ठ कार्य करने वालों को प्रोत्साहन मिलता है, बल्कि दूसरों को भी प्रेरणा मिलती है। 'बाल-सारथी' की सामग्री बच्चों के लिए ही नहीं, बड़ों के लिए भी काफी ज्ञानवर्धक होती है। एक संतुलित अंक के प्रकाशन के लिए साधुवाद।

सुरेश राणा
हिंदी प्राध्यापक
रावमा विद्यालय मुर्तजापुर, खंड-पेहोवा
ज़िला-कुरुक्षेत्र, हरियाणा

आओ स्कूल चलेंगे

अंजू, अंजली और ये राम भतेरी,
कोई बालक न छूटे, आओ स्कूल चलेंगे।
पढ़ने को मिलती हैं मुफ्त किताबें,
है बैग मिलता मुफ्त, आओ स्कूल चलेंगे।
खीर, कभी दलिया और सब्जी-रोटी,
मिड-डे मील तैयार है, आओ स्कूल चलेंगे।
जात-पात का भेद नहीं, मिलकर खाना खाएँ,
अपना हक सबको मिलता, आओ स्कूल चलेंगे।
टाट, बैंच और बढ़िया-बढ़िया कमरे होते,
खेल सुविधा मिलती सबको, आओ स्कूल चलेंगे।
हरा-भरा वहाँ बढ़िया प्रांगण है होता,
शुद्ध-ऑक्सीजन लेने, आओ स्कूल चलेंगे।
सांस्कृतिक उत्सव सबका मन हैं हरते,
बाल-रंग का रंग जमाने, आओ स्कूल चलेंगे।
पेंटिंग, मेहँदी, रंगोली, नृत्य और गायन,
स्लोगन में इनाम जीतने, आओ स्कूल चलेंगे।
कभी स्काउट, कभी एनसीसी में भाग लेने
विज्ञान मेलों में ज्ञान बढ़ाने, आओ स्कूल चलेंगे।
कभी केरल, पचमढ़ी, मनाली व मल्लाह,
एडवेंचर कैंपों में भाग लेने, आओ स्कूल चलेंगे।
कोई शिक्षक बीए, एमए और एमएड
पीएचडी भी खूब मिलेंगे, आओ स्कूल चलेंगे।
आदर भाव, संस्कार सिखाते हैं शिक्षक,
जीने की कला सीखने, आओ स्कूल चलेंगे।
ज्ञानी ध्यानी अनुभवी गुरुजन हैं यहाँ सारे,
अपना ज्ञान बढ़ाने, आओ स्कूल चलेंगे।
है छोटे-बड़े का कोई न भेदभाव,
सबको सम्मान मिले, आओ स्कूल चलेंगे।
इस लायक बनें हम छू लें गगन को,
कुछ नया सीखने, आओ स्कूल चलेंगे।
साइंस लैब में बच्चे वैज्ञानिक हैं बनते
पुस्तकालय में ज्ञान बढ़ाने, आओ स्कूल चलेंगे।
खेल के मैदान सफलताओं की खान हैं,
खेलों में नाम चमकाने, आओ स्कूल चलेंगे।
हैं साधारण बच्चे बड़े खिलाड़ी बनते।
विश्वभर में नाम कमाने, आओ स्कूल चलेंगे।
सरकारी स्कूलों में बड़े अफसर हैं बनते,
रोज़गार पाने को, आओ स्कूल चलेंगे।
कोई आईएएस, कोई आईपीएस बनते,
सैनिक बन सेवा करने, आओ स्कूल चलेंगे।
हरे भरे प्रांगण, सारी बगिया फूलों से महके,
फूलों की खुशबू लेने, आओ स्कूल चलेंगे।
भ्रमर गाएँ, तितली उड़ती रंग-बिरंगी,
पंछी गाएँ सारेगामा, आओ स्कूल चलेंगे

-डॉ. ओमप्रकाश कादयान
राजकीय कन्या वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय
एमपी रोही, फतेहाबाद, हरियाणा

RNI NO: HARBIL/2012/52385

POSTAL REGD NO: HR/AB-102/23-25

विश्वास

लोगों के जीवन को उन्नतशील बनाने हेतु जब उन्हें उत्तरदायित्व सौंपते हो, जब तुम उनमें आत्मविश्वास उत्पन्न करते हो, जिसके अभाव में वे कुछ भी नहीं हैं। जब उनमें आत्मविश्वास उत्पन्न हो जाता है, तब वे अति कठिन परिस्थितियों से भी जूझकर उनका समाधान कर सकते हैं और उनमें यह आत्मविश्वास जागृत करने के लिए आवश्यक है कि तुम्हें उनकी राष्ट्र-निर्माण की शक्ति पर पूरा भरोसा हो। विश्वास से विश्वास उपजता है और प्रजातंत्र तब पनपता है, जब समस्त जन-समुदाय, विशेष कर समाज के कमज़ोर वर्गों के लोग पूरी तरह इस तथ्य को स्वीकार करें।

- स्वामी विवेकानन्द

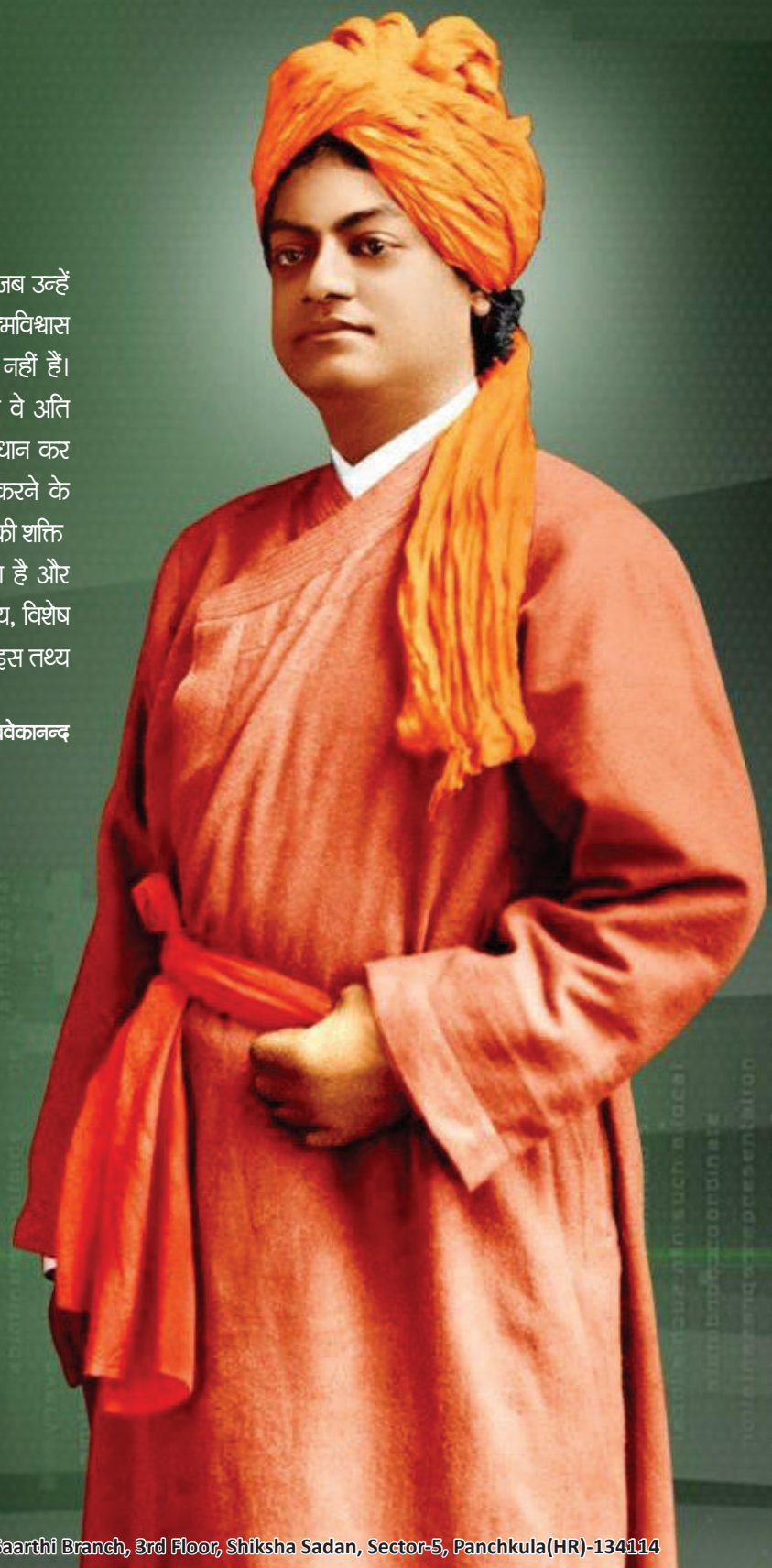

If undelivered Please return to c/o Shiksha Saarthi Branch, 3rd Floor, Shiksha Sadan, Sector-5, Panchkula(HR)-134114